विनय करतहैं हे नाथ यह धर्मशास्त्रको सम्मतहै कि नेकी किये नाम भली जो कर्तव्यता सोऊ आपनेमुखते कहतेनसुनीहै नाम निष्फल होतहै अरु कियेके जगह जौंछिये पाठहोय तो यह अर्थ भयो कि नेकीकी करणी अपने मुखकहेते नाशहोतिहै यह बूझि छियेनामहृदयमें गुप्तराखै अभिप्रायदोऊपाठको एकहै अरु अन्त-र्यामीजोआपहैं कृपानिधान सो सबके जीकीजानतहौ तबतुलसी को अपनी निष्ठा कहनीयहअयोग्यहै हे स्वामीयह अर्थ है १७८ ॥

मू० । कहांजाउंकासोंकहौंकोसुनै दीनकी । त्रिभुवनतुहीगतिसब
सकुहीनकी । जगजगदीशघरघरनि घनेरेहैं । निराधारको
अधारगुणगणतेरेहैं । गजराजकाजखगराजतजिधायोको ।
मोसेदोषकोसपोसितेसमायजायोको । मोसेकूरकायरकपूत
कौड़ीआधके । कियेबहुमोलतेकरैयागीधसाधके । तुलसीकी
तेरेहीबनायेबनैगी। प्रभुकीबिलंबअंबदोषदुखजनैगी ॥ १७९ ॥

टी० । पूर्वोक्तको दृढ़करतहैं पूर्व कह्यो जोअशरण शरण तासो प्रमाण गजेन्द्रकोदिये ऐसो गरीबनेवाज आपैहौ हम ऐसे दोषके भण्डार को पोषे नाम पालन करै सो कौशल्या जू को त्याग करि दूसरी कौनमाता तुम सदृश बेटा उत्पन्न करिहै अर्थात् तुम ऐसे तुमही हौ और तुम ऐसे हौ कि हम ऐसेकूर अरु कायर नाम कादर अर्थात् संसारतेडरे कपूतनाम निकम्मे जाको आधीकौड़ी पर कोऊ न पूछे सो बहुमोल करत भये अर्थात् तुम्हारे कहाये ते जगत पूजतहै सो यहतुम्हारी सनातनकी बिरदावलीहै काहे कि गृद्धके श्राद्धके कर्त्ताहौ तुलसी की तुम्हारे बनायेबनैगी बलि-हारीहै हे रघुबर अरु प्रभुकी जो बिलम्ब सो अम्बनाम माताकप होकरि दोषदुंखरूपी पुत्र जनैगी नाम उत्पन्न करैगी अर्थात् अब बिलंब मतिकरो ॥ १७९ ॥

मू० । बारकबिलोकिबलिकीजैमोहिंआपनो । रायदशरत्थकेतू उत्थ-
पनथापनो । साहिबशरणपालसबलनदूसरो । तेरोनामलेतही
सुखेतहोतऊसरो । बचनकर्मतेरेमेरेमैनगड़ेहैं । देखेसुनेजाने
मैंजहानजेतेबड़ेहैं । कौनेकियेसमाधानसनमानशिलाको ।
भृगुनाथसोंरुषीभिलैयाकौनलीलाको । मातुपितु बंधुहित
लोकवेदपालको । बोलकोअचलनंतकरतनिहालको । संगही
सनेहबस अधमअसाधुको । गीधशबरीकोकहोकरिहैश्राध

को। निराधारको अधार दीनकोदयालुको। मीतकपिकेवट रजनिचरभालुको। रङ्कनिरगुणीनीचजेतनेनिवाजे हैं। महाराजसुजनसमाजतें बिराजे हैं। सांचोबिरदावलीनबढ़ि कहि गई है। सीलसिंधुढीलतुलसीकीबारभई है॥१८०॥

टी०। शरण ह्वै यह प्रार्थना करत हैं राय दशरथके नाम हे दशरथके पुत्र अन्य शब्दहुको अर्थ पीछेलिखिआये हैं नामको प्रभाव कहत हैं वचन मनक्रम मेरे तेरेनाम तुमबिषै गड़े हैं नाम लगे हैं अर्थात् कर्मते परिचर्या वचनतेंनाम अरु गुण मनकरि स्वरूप को ध्यानयाही व्यापारसो निरन्तर हैं तासो हेतु कहत हैं कि जहान जो संसार तामो जितने ऐश्वर्यवानबड़े हैं ताकोंदेखे अरु स्वर्गादि के स्वामी जो इन्द्रादि ताकों शास्त्र तें सुने तथा तेहर को प्रभाव जाने पूर्वकहो जो ऐश्वर्यवान सबतिनमो केहने कियौ है समाधान नाम पूर्वकी नाईं चैतन्न करि सत्कारपाषान को तथा परशुराम सहशको लीलापूर्वक जीतनेवालो कौन इहां पाषाणरूप अहल्या के सनमानकरि दीनबन्धुता परशुरामजूके जैकरि अद्वितीय ईश्वरता निश्चयकिये मातापिता भ्राताको हितकारी अरु लोक बेद दोउकोपालक दूसरोकोहै अर्थात् महाराज दशरथ अरु कैकेई की प्रसन्नता के निमित्त अयोध्या कों ऐश्वर्य तृणवत् त्याग किये अरु भ्राता जो भरतादि ताकों अपनेप्राणतें सर्वदा अधिक माने सो यहस्वभाव दूसरे अवतारऊमों नहीं सुन्यौ तथाबोलको अचल नामजो वचन मुखतें निकस्यौ सो तीनोंकाल मे अन्यथा नहींहोत नतजो एकबार प्रणामकरतजीव ताकोनिहालनाम कृतार्थकरनो अर्थात् फेर कोऊ कामना जाकों न होयऐसो उदार दूसरोको केवल जेहपाप अधम अरु असाधु आचरण जाको ताहूको संग्रही नाम शरण दाता सो सुग्रीव विभीषण अगम्य गमन कर्तव्यता तें असाधु अरु हिंसारूप जीविका जेह निषादादि को तेहते अधम यह प्रसिद्ध है तथा गृद्ध शबरी को श्राद्ध केहने कस्यो है अर्थात् निर्गुणं सगुण भगवान को अनन्तरूप वेदशास्त्र कहत है पर गृद्ध कों पिता अरु शबरी को माता काहू ने न मान्यौ निराधार जो विभीषण ताकों आधार दीनजो सुग्रीव तेहको दयाल दूसरोको तथा बानरादिकों मित्र किसने कियो अर्थात् यहगरीब नेवाजी केवल रामजू सो हैहे रघुवर दरिद्री गुणहीन जाति करि नीच

जेहगोहको आपनिवाजे हे महाराजते सब सज्जनन्हके समाजमें विराजत हैं यह सब गुणअरु कृपालुता विचारिसबको त्यागकरि आपके शरण भये येतकहो कि अपने मतलबकेअर्थ इतनी बड़ाई करतहो सो हेरघुवर सांचो विरदावली वेदशास्त्र पुकारतहैं कछु बढ़करि न कहि गई है अर्थात् जितने गुण अरु जो ऐश्वर्य आप विषें है तेहकों वेदादि नकहिसके हैं तो अधिकको कहेंगे पर हे शीलसिन्धु तुलसी की बारढील भई है अर्थात्ऐसे गरीबनेवाज कों ऐसे गरीबपर इतनी ढील न चाहिये ॥ १८० ॥

मू० । केहूभांतिकृपासिन्धुमेरीआेरहेरिये। मोकोऔरठौरनसुटेक एकतेरिये। सहसशिलातें अतिमतिजडभई है। कासोंकहैौं कौनेगतिपाहनहिंदई है । पदरागयाग चहैांकैाशिकज्यें। कियैाहै। कलिमलखलदेखभारीभीतिभयोहै। कर्म कपीश बालिबलीत्रासत्रस्यैाहैां । चाहत अनाथनाथतेरीबांहबस्यैा हैां। महामोहरावणविभीषणज्यैांहयैाहै।त्राहितुलसीशत्राहि तिहूंतापतयैाहै ॥ १८१ ॥

टी० । हे कृपासिंधु काहू प्रकार मेरी आेर देखो मोकों आैर जगह है नहीं सुन्दर टेक एक तुम्हारी येहैं अर्थात् बनेतो तुमतें अरु बिगड़े तो अपने अभाग्यतें पर दूसरेके सन्मुख नजैहेंगो यह मेरोहठहै अन्यते नहीं कहबेमो हेतु कहतहैं कि हजार पाषाण तें अधिक जड़ मेरी बुद्धिभई है सो काेउ दूसरेने पाषाणको गति नहींदईतो अपनी गरज कैहतें कहें तथा आपहूकों मेरी बुद्धि पावन किये तें हजार अहल्या के गतिदैबेको यशहोयगा विश्वामित्रके यज्ञकी रचाकिये तैसेंचरण कमल अनुराग रूप यज्ञ मैं कियो चाहत हैां पैसें ऋषि के यज्ञ को मारीचादि बाधा करत रहे तैसे कलिमल रूप जोखल ताकों समूह देखिकरि मोकों भारी भयभयो है अर्थात् जैसे मारीचादि को नाश किये तैसेकलिको जो अनेक मल ताकोंजबदूर करो तबमेरोअनुराग रूप यज्ञ सिद्धहोय अनेक निषेधं जो कर्मसोई कपीशनाम बानरन्हको राजा बालिरूप अतिंबली तेहके त्रासतें सुग्रीवरूप जोमैं सो डरोहैां सो हे अनाथ नाथ तुम्हारे भुजाको आश्रयकरि बस्यैा चाहतहैां महा मोह रूप रावण विभीषण की नाईं मोकों नाश करतहै तेह हेत तें त्रयतापकरि जलत हैां हे तुलसी के स्वामी त्राहि त्राहि ॥ १८१ ॥

मू० । नाथगुणगाथसुनिहोत चितचाउसो। रामरीझिबेकोंजानोंभक्ति

नभाव्रसो। कर्मसुभावकालठाकुरनठाउंसों। सुधननसुतनसुम ननसुआउसो। याचोंजलजाहिकहेअमियपिआउसो। कासों कहौं काहूसों नबढ़त हिआउसो। बापबलिजाउंआपकरि- ये उपाउसो। तेरहीनिहारे परैहारेहूं सुदाउसो। तेरेही सुझायेसूझै असुझसुझाउसो। तेरेहोबुझायेबूझैअबुझबुझाउं सो। नामअवलंबअबुनीनमीनराउसो। प्रभुसोबनाइकहौंजीह जरिजाउसे। सबभांतिबिगरीहैएकासुबनाउसो। तुलसीसुसा- हिबहिंदियोहै जनाउसो॥ १८२॥

टी०। हेनाथ आपके गुण की कथा सुनिचितमो अतिचाउहोतहै पर आपको रीझबेको कछू भक्तिभाव न जानतहौं ऐसो मेरो सुन्दरकर्म अरु स्वभाव नहीं काल नाम सत्य युगादि धर्म को काल नहीं तथा ठाकुरनाम अनाथ हौं ठांवसो नामस्थान हीनहौं अरुसुन्दरधन सुतनाम सपूतपुत्र सोऊनहीं सुमन नाम शुद्ध मन नहीं सुआयुनाम जेहि आयुर्बल करि अपनो कल्याण होइ सोऊ नहीं यही सबसुखके हेतुहैं देहकरि हीनहौं जेहतें अपनो दुख कहनो ताकी यह रीति देखतहौं कि जासों जलयाचतहौंसो कहतहै कि मोकोंअमृत पान करावो अर्थात् अपनी छोटी कामना जेहते सुनावत हौं सो अपनी वाहुते बड़ी कहतहैसो लोकमो प्रसिद्धहै किजेहकेगृहकोई अभ्या- गत जातहै ताकों भोजन बस्त्र मापको प्रयोजन तेहतेंतवन जोगृह- स्थसो ऐश्वर्य्यपुत्रादि मांगतहै यहांजेहदेवतातें जलतुल्य सुखचाहत हौं सो अमृत तुल्य जो समस्त आयुर्बल ताको चाहतहै अर्थात्भरि जन्म जो सेवा करै तब कुछ ऐश्वर्य्यादि देहि यह हेतु तें अपना दुख कासोंकहौं हिआउ नाम हृदय कहबे को काहूसों नहीं बढ़त है पूर्वकही जो अपनी दीनता सो बिचार करि हेपिता बलिहारीजाउं आपकछु याकेभलेको उपायकरो काहेकि आपकी कृपा दृष्टितेहा- रेहू सुदाउं परतहै अर्थात् व्यर्थभयोजो जन्म सो सफल होतहैआपै केसुझाये नहीं सूझबे योग्यजो आपको तत्वसो सूझै हैसो सुझावो तथा नहीं बूझबेयोग्य जोबेदको हृदयसोउ आपके बुझायेते बूझै है सो बुझावो मोको दूसरीगति नहीं आपके नामैको जो अवलंब सोई जल तुल्य है जो दीन सो मीन राउ नाम बड़ी मछली अर्थात् छोटी मछलीपलदोपल जलतेंभिन्न होकरि जीवैभी पर बड़ी नहीं जीवति तद्वत्मेरी वृत्तिहै चेतकहो कि ऐसी निष्ठा तुम्हारीनहीं तो प्रभु सों

जौमैं नालायकहौंतो जिह्वा जरिजाउ यह सपथमेरीतो सब प्रकार बिगड़ चुकोहै पर एक यही भली बनबेकी प्रतीतिहै कि सुसाहिब जो आप तासों अपनी दशा तुलसीजनाय दियो ॥ १८२ ॥

मू० । रामप्रीतिकीरीतिआपजानियतहैं। बड़ेकीबड़ाईछोटेकी छुटाई दूरिकरैऐसीबिरदावलीबलिबेदमनियतहैं। गीधकोकियोश्राद्ध भीलनीको खायो फलसोऊसाधु सभाभली भांतिभनियत हैं । रावरेआदरेलोकबेदहूंआदरियतयोगज्ञानहूं तेंगरूगनियत हैं । प्रभुकी कृपाकृपालुकठिनकलिहूंकाल महिमासमुझिउर आनियतहैं । तुलसीपरायेबसभयेरस अनरसदीनबन्धु द्वारेहठ ठनियत हैं ॥ १८३ ॥

टी० । हेरामजू प्रीतिकी रीति आपै जानतहो तथा बड़े की बड़ाई नाम बिमुख जीवन्हकी छोटे की छोटाईनाम सन्मुख जीवन्ह की दूरि करै ऐसी बिरदावली बलिजाउं हे रघुबर आपकी बेदमें नियत है नाम मानत है सोऐश्वर्य आपकोहै चेत आपकहो कि बड़े पुरुषन्ह को अति नीचके संग्रहकियेतें निन्दा होतिहै सो हेस्वामी यहप्राकृत जीवको बिचारहै आपकोनहीं काहेकि गिद्धको श्राद्धकरि भिलनीको फलखायो ऐसऊ नीचको संग्रह साधुन्ह के समाज बिषै भले प्रकार भनियतनाम गायोजातहै तथा कैसऊ नीचहोय आपके आदर कियें लोक बेद दोऊ आदर करत हैं योग अरु ज्ञान प्राप्त जाको ताहूते गरूनाम श्रेष्ठगनियतहैं नाममहात्मा प्रमाण करतहैं हेकृपाल सबके प्रभु जो आप ताके कृपाकी महिमा कठिन कलिकालहू मो समुझि करि हृदयमों लैआवतहौं तुलसी परायेबस नाम संसार के आधीन भयेतें रसनाम सुखरूप जो आपको अंश जीवसो अनरसनामदुखरूप भयो हेदीनबंधु आपके दरवाजेपर हठठानियत है नाम हठी ह्वै करि पड़्योहै अर्थात् गाजीधकाकीको कहै घसीटेहूं डयोढ़ी न छोड़ेंगोयह बिनय है ॥ १८३ ॥

मू० । रामनामकेजपेपैजायजियकीजरनि । कलिकालअपरउपायतें अपायभयेजैसेतमनाशिबेकोंचित्रकेतरनि। करमकलापपरिताप पापसानेसबज्योंसुफूलफलेतरुफोकटफरनि । दंभलोभलालच उपासनाबिनासनीकेसुगतिसाधनभईउदरभरनि ।योगनसमाधि निरुपाधिनाबिरागज्ञानबचनबिशेषबेषकहूनकरनि । कपट कुपथकोटिकहनिरहनि खोटीसकलसराहैंनिजनिज आचरनि ।

मरतमहेशउपदेशहैंकहाकरतसुरसरितीरकाशीधरमधरनि ।
रामनामकोप्रतापहरकहैंजपैंआपयुगयुगजानैजगवेदहूंबरनि।
मतिरामनामहीसों रतिरामनामहीसों गतिरामनामहीकी
बिपतिहरनि । रामनामसोंप्रतीतिप्रीतिराखैकबहूंकै तुलसी
ढरैंगेरामआपनीढरनि ॥ १८४ ॥

टी० । कलिकाल बिषैं राम नाम त्यागकरि दूसरे साधनतें जीव को कल्याण नहीं यह सिद्धान्त करत हैं जियकी जरनि जो त्रयताप सो केवलरामनामके जपेतें जातहै चेतकहो कि ज्ञानादि अनेक साधनको प्रभाव क्योंकरतहो तेहपर कहतहैं कि कलिकाल बिषे अपर जो ज्ञानादि साधनतें सब उपायतें अपायभे नामभक्तके वास्ते करना तेहतें बुरा होतहै हितोपदेश ग्रंथबिषैं इतिहास लिख्यौहै किएक पेड़ के ऊपर बहुत बगुला बच्चा किये रहे वा वृक्षके खोडर मो बड़ा सर्प रह्यो सो नित्य दो चार बच्चन्हि को खायजाय बगुला जब सब बाहरतें चारालैकरि आवैं तब बिषादकरैं वामो एकवृद्ध रह्यो तानें कह्यो कि आज तुमसब जाओ हम रहिकरि चौकी करैंगे सोवाने सांपको देख्यौ जब सब बगुला चारालैकरि आये तबवाने भेदकह्यो तेह सर्पके मारबे को उपाय सब मिलिकरि वाही वृद्धतें पूछत भये तबवाने एक रुक्मत दियौ कि जेह खोडरमो सर्पहै तहांतें मछली रखते नेउर के बिल तक रखिजावो तैसोई सब करत भये सो जब नेउर निकल्यौ तो मछलीके लोभतें खोडर तक आयौसर्पतें युद्धभयौ वा नेउरने मारडारयौ पश्चात् पेड़पर चढ्यो तो सर्प दोचारको खात रह्यौ यहनेउरकी जातिबहुतन्हकों खायौ अनेकन्हकों अंगभंगकरि मारिडारयो तहां देखाये कि उपाय करते ऐसे अपाय होयहै तथा ज्ञानादि साधनं जीवकी कल्याणको और युगको उपायरहेपर कलिकालको पाय सो ज्ञानादि साधन जीविका के अर्थ तथा अहंज्ञानी अहंभक्त अहंबिरागी ऐसो अभिमान करि संसारके हेतु ह्वैगये जैसे अन्धकार के नाश करबे को चित्रको लिख्यौ तरणि नाम सूर्य व्यर्थ तद्वत् भये समुदाय करिऊपरकह्यो अवमुख्य जोसबसाधन तेहको पृथक् २निःश्शील देखावतहैं कर्म जोयज्ञादि ताको कलापनाम समूह सो परिताप अरु पापतें साने सब अर्थात् अधिक प्रयासतें ताप अरु हिंसाकरि पाप होतहै ताहूपर जैसे वृक्ष सुन्दर फूल फूले पर फल वाको फोकट नाम मिथ्या अर्थात् यज्ञादि जो नाना कर्मतेहकरि

फलरूप जो विषय सुख स्वर्ग संबंधी सो होत है पर नाशमान है तेहते मिथ्या कहे तथा उपासना जो भक्ति ताको दम्भ जो आडम्बर बहुत देखावनो लोभगुप्त लालच जो प्रकटताने नीकीप्रकार विनाश करि डार्‍यो अन्य जो संगतिको साधन पुराण पाठादि सो पेट पालनके अर्थ ह्वैगये योग जो अष्टांग अरु समाधि सो रोगकी अधिकताकरि तथा आयुर्बल थोड़ी तेह हेतु निरुपाधि नाम निर्विघ्ननहीं अरु मनके बस नहीं भये तें वैराग्य ज्ञान सिद्ध नहीं होते यहँ हेतु विषे बचन विशेषतें सबमों देखिपड़ेहै पर करणी कहूं नहीं काटकरि कुपथ नाम वेद बाह्य मार्ग ग्रहण करतहै अरु कोटिन्ह प्रकार की कहनि नाम कथनी पर रहनि खोटी ताहू पर अपने २ आचरण को सब सराहि रहे हैं पूर्वोक्त रीति करि सब साधनको अभाव कहे अब राम नाम की मुख्यता जनावत हैं कि धर्म धरणि नाम धर्मरूप पृथ्वी जो काशी अरु गंगाजू को तट तहऊं, जीवके मरण कालमो शिवजू उपदेश कहा करत हैं नाम राम नाम को प्रताप शिवजू अनेक ग्रंथन्हिमो कह्योहै अरु आपऊ जपतहैं अर्थात् मुक्तिक्षेत्र काशीदूसरी मुक्तिरूप श्रीगंगाजी तीसरे साक्षात् ईश्वर शिवजू सो उपदेष्टा तहऊं राम तारक महामंत्र वितरेक जीवको कल्याण नहींहोत सोबेदऊ वर्णनकरतहैं अरु जगतजानेहै अर्थात् लोकवेद दोऊमो नाम को प्रभाव विदित है अरु युग युग नाम सत्य युगमों ज्ञान ध्यान त्रेतामो यज्ञ द्वापरमों पूजा अपने २ कालमों फलदेत हैं कलिकाल मों तेह सबको अभाव कहि आये तेहते विपर्ययश्रीराम नाम चारों युगमो जीवन्हि को कल्याण कियौ करत है करैगो यह आधिक्यहै पूर्वोक्त सिद्धान्त विचारकरि जीव को उचितहै कि राम नामहीमो मतिलगावै अरु वाहीमों रतिनाम प्रीतिकरै तथानामही की गतिनाम विश्वास ऐसी निष्ठा समस्त विपत्ति को नाश करति है चेतकहो कि जबजन्म पर्यन्त ऐसी निष्ठा निबहै तबकल्याणहोय सो नहीं राम नामसों प्रीति प्रतीति कबहूंक राखे नाम काहू कालमो होयतो तुलसी को निश्चय है कि श्रीरामजू आपनी ढरनि ढरेंगेनाम अवश्य कृतार्थ करेंगे अर्थात् अजामिलादि पतित शिरोमणि सो मरण समयमो व्याजकरि भगवन्नामकौं कहि कृतार्थभये तामो वेद पुराण अरुव्यास बाल्मीकादि महात्मा सबप्रमाणहैं यहअर्थहै १८४॥

मू०। ब्राजनलागतदास कहावत। सोआचरणबिसारि शोचतजि

जो हरि तुमकहं भावत। सकलसंगतजि भजतजाहि मुनिजप
तपयोगबनावत। मोसममन्दमहाखलपांवरकौनयतनतेहि
पावत। हरिनिर्मलमलग्रसितहृदयअसमंजसमोहिंजनावत।
जेहिसर काक कंक बक सूकरक्यों मरालतहंआवत। जाकी
शरणजाइकोविददारुणत्रैताप बुझावत। तहंगये मद मोह
लोभअतिसरगहुंमिटतनआवत। भवसरिताकहं नावसन्त
यहकहिऔरनिसमुझावत। हौंतिन्हसोंहरिपरम बैरकरि
तुमसों भलोमनावत। नाहिन औरठौरमोकहं तातेंहठि
नातोलावत। राखुशरणउदार चूड़ामणि तुलसिदास गुण
गावत॥ १८५॥

टी०। भक्तन्हतें बिपर्यय आचरण आपनो देखावत हैं हेरघुबर तुम्हारोदास कहावत मोकों लाज नहीं लगत है काहे कि जौन आचरण तुमकौं प्रियलगै है सो शोच त्याग करि बिस्मरण किये अर्थात् तेहिआचरण त्यागकियेको सोचऊ नहीं करते सकल जो इन्द्री ताको संगनाम विषयाभिलाष त्यागकरि जो तुमको मुनि सब भजतहैं अनेक साधनको बनावत नाम करत तेहिकौं मैं जो नीचसो कैसे पाऊं निर्मल हृदय बिना भगवान नहीं प्रकटहोते अगिलेतुकतें दृष्टान्तदेतहैं जाके शरणहोकरि पण्डित सब कठिन त्रैताप बुझावत नाम नाश करत हैं ताहू शरणमो जाकरि मद मोहादि अत्यन्त होय तो अभाग्य को अवधि है जैसे स्वर्गहू मो सावतनाम स्रवति डाह तद्वत् जो स्पर्धा सो न मिटति है अर्थात् हमतें कोऊ अधिक न होय यह ईर्षा इन्द्रादिकौं विशेष होतहै सो स्वर्ग जो सुखरूप तहां यह न चहिये तैसें भगवत शरण मद मोहादिके नाशको हेतुहै तेहिशरण को अवलंबकरि हमबड़ेभक्त ऐसो अभिमान अरु शरीरादि मो ममतारूप मोह तथा बिषय सुखलोभ जो होय तो जलतेंअग्नि मिल्यो औरन्हकौं समुझावतहूं आपके दासन्हको महिमा हे हरि अरु मैं तिनसौं बैरकरि तुमसों भलो मनावतं नाम चाहतहौं अर्थात् आपके अतिप्रिय जो भक्त तेहितें बैर किये आप कब भलो करेंगे यह मेरी अज्ञानता है यद्यपि मैं सब प्रकार मन्दहौं पर दूसरीजगह नहीं तेहितें हठ करि आपको गुलामहोतहौं सो हे उदार चूड़ामणि तुलसीदास

कौं और कोऊ गुणनहीं पर आपको गुणगावत है यह विचार करि शरणमो आयों यह विनय है ॥ १८५ ॥

मू०। कौनयतनविनतीकरिये। निजआचरणविचारि हारिहिय मानिजानिडरिये। जेहिसाधनहरिद्रवहुजानिजन सोहठि परिहरियै जातेविपतिजालनिशिदिनदुखतेहि पथअनुसरियै। जानतहूं मनकर्मबचनपरहितकीन्हेतरिये। सोविपरीतदेखिपरसुखबिनकारणहीजरियै। श्रुतिपुराणसबकोमत यहसतसंगसुदृढधरियै। निजअभिमानमोहईर्षावसतिन्ह हिन आदरियै। संतत सोइ प्रिय मोहिंसदाजातें भवनिधितरियै। कहोअबनाथकवन बलतेसंसारशोकहरियै। जबकब निजकरुणासुभावतेंद्रवहुतोनिस्तरियै। तुलसिदासविश्वास आननहिंकतपचिपचिमरियै ॥ १८६ ॥

टी०। हे रघुबर कवन यतन करि आपतें विनयकरैं काहेकि अपनो आचरण विचारत हृदयतें हारि मान तथा आपको ऐश्वर्य जानि करि डरत हौं अपनो आचरण बिपरीत जनावत हौं आपै कहो हे नाथ कि जब ऐसी उलटी करनी तब कौन बलतें संसार शोक दूरकरें जब कब आपके करुणाकरि तुलसीदास संसार को पार पावैगो यह विश्वास करि अपने पौरुष को बलछोड़ि आपके कृपा को आश्रकियो है ॥ १८६ ॥

मू०। ताहितेंआयोंशरणसबेरे। ज्ञानविराग भक्तिसाधनकछुसपनेहुंनाथनमेरे। लोभमोहमदक्रोध बोधरिपुफिरतरैनदिन घेरे। तिन्हहिंमिले मनभयो कुपथरतफिरैतिहारेहि फेरे। दोषनिलययहविषयशोकप्रद कहतसंतश्रुतिटेरे। जानतहूं अनुराग तहांअतिसोहरितुम्हरेहिप्रेरे। विषपियूषसमकरहु अग्निहिमतारिसकहुबिलुबेरे। तुम्हसमईशकृपालुपरमहित पुनिनपाइहौंहेरे। एहिजियजानिरहौंसबतजिरघुबीरभरोसे तेरे। तुलसिदासयहिबिपतिबागुरैतुमसौंबनिहिनिबेरे १८७ ॥

टी०। मुख्यसाधन जो ज्ञानादि सो अपने मो नहीं है तेहिते सबेरेनाम शरीरमो पौरुषरहते आपके शरणमो आयोंहै लोभादि अरु बोधरिपु नाम अज्ञान सो राति दिन मोको घेरे फिरत हैं तिनते मिल्यो जो मनसो कुमार्गमो रतभयो सो मन अन्तर्य्यामी जो आप ताके फेरेते फिरै मेरो बसनहीं है समस्त दोषको निलै

नामगृह जो यह विषय ताकों सन्तस्तुति पुकारि शोकप्रदकहत हैं ऐसा जानतहुं तहां नाम तेहि विषैमो अनुरागभयो है सोऊ आपै की प्रेरणाहै काहेकि दुखके मार्गमो स्वतंत्र कोऊ नहीं जाय तेहिते यह निश्चयभयो कि आपके आधीनहै पूर्वकही जो ईश्वरता सो आधे तुकते पुष्टकरि आधे तुकते कृपालुता जनावत हैं पूर्वोक्त हेतुन्हकों बिचारि सब भरोसा छोड़ि तुलसी आपके शरण है वागुरी नाम फन्दा बन्धनरूप अन्यत्स्पष्ट है ॥ १८७ ॥

मू० । मैंतू अबजान्यौ संसार । बांधिनसकहिमोहिं हरिकेबलप्रकट
कपटआगार । देखतहीकमनीयकछुनाहिनपुनि २ किये
बिचार । ज्यौंकदलीतरुमध्य निहारतकबहूंन निसरतसार ।
तेरेलियेजन्मअनेकमैं फिरतनपायौंपार । महामोहमृगजल
सरितामहंबोरेहौंबारहिंबार । सुनुखलछल बलकोटिकिये
बसहोहिनभक्तिउदार । सहितसहायतहांबसअब जेहिहृदय
ननन्दकुमार । तासौंकरहुचातुरीजोनहिंजानेमरमतुम्हार ।
सोपरिमरैडरैरजुअहितेबूझैनहिंब्यवहार । निजहितसुनुशठ
हठनकरहिंजौंचहहिं कुशलपरिवार । तुलसिदास प्रभुके
दासन्हतजिभजहिंजहांमदमार ॥ १८८ ॥

टी० । संसारते कहतहैं कि रेसंसार मैं तू नाम हम हमार यही तेरोस्वरूपहै सो अबजान्यो अरु जौ मैं तो पाठहोय तौ मैंने तोको जान्यौ रेसंसार यह अर्थहै तौ भगवान्के बलके आश्रयमोरे प्रकट कपटको आगारनाम गृहमोकोतू बांधि न सकैगो कैसोसंसार है देखने मात्र कमनीय नाम सुन्दर बिचार किये कछू नहीं तहां ऐसो संदेह होतहैकि प्रत्यक्षदुखसुख भोगहोतहै सो कैसेतेहिपर दृष्टान्तदेकरि देखावतहैंकि जैसे केलाकेवृक्षमो निहारंतनामदेखत सारनहीं निकसतहै अर्थात् देखवेमो पेड़ अरु फूलफल प्रत्यक्ष है पर ज्यौं छीलियोतो अन्तकाष्टतुल्य सारनहीं मिलतछिलकेरहि-जातहैं तैसे संसारकोनाना बिलासदेखपड़तहै पर जोसतअसतको बिचारकरें तो परमेश्वरते भिन्नसंसारकछुवस्तु ठहरत नहीं मिथ्या करि दृढ़करतहैं अनेकजन्म संसार समुद्र को तेरे लिये नामपार होबे निमित्त फिरतनाम अनेकयोनि भ्रमणकिये परपार न पाये महामोहरूप जो मृगतृष्णाकी नदीतामो बारबार हम डूबतभये अर्थात् सत्य समुद्रको वार पारहै जहाजके ऊपरचढ़ेते किनारा

मिलत है श्रीमृगतृष्णा को जब सत्य समुद्र मान्यौ तब वाको वार पार है नहीं कैसे किनारा मिले यह भावहै स्वरूप कहिकरि अब संसारते कहतहैं कि रे खलसुन कोटिन्ह कुल बलकियेते उदारभक्त तेरे बसनहीं होते ऐसो विचार अपने सहायजो काम क्रोधादितेहि सहित जेहके हृदयमो भगवान् नहीं तहां निवासकरु रे संसार तासों छलरूप चातुरीकर जोतेरे मरमनाम भेदको न जानेकाहे कि जेवरीके सांपते सोइ डरिमरे है जो व्यवहार नाम जेवरीरूप नहीं बूझे अर्थात् मैं तो को पहिचान्यौ अबमेरे ऊपरतेरो बलनहीं है सकत रेसंसार शठ अपनोहित सुनजो परिवार सहित अपनो कुशल चाहत है तो हठ मतिकरु नाम भक्तन्ह के बस करिबे की अभिलाषा मतिकरु तुलसीदासकें कह्यौ मानिलेप्रभुकेदासन्हको त्यागकरि जहां मदमारादि सहायतेरे होहिं ताको भजहि नाम सेवनकरि इहां अपनेकेभक्त करि संसारको तिरस्कारकिये तेहिते मनोराज्यनिश्चय भयो १८८ ॥

मू०। रामकहतचलुरामकहतचलुरामकहतचलुभाईरे। नाहींतो
भवबेगारिमहंपरिहौछूटतअतिकठिनाईरे। बांसपुरानसाज
सबअठकठसरलतिकोनखटोलारे। हमहिंदिहलकरिकुटिल
करमचन्दमन्दमोलबिनुडोलारे। बिषमकहार मारमदमाते
चलहिंनपावबटोरेरे। मन्दबिलन्द अभेरादलकन पाइयदुख
झकझोरेरे। कांटकुराय लपेटनलोटन ठांवेठांवबभाऊरे।
जसजसचलियदूरितसतसनिजबासनभेंट लगाऊरे। मारग
अगम संगनहिंसंबल नावंगांवकरभूलारे। तुलसिदासभव-
त्रासहरहु अबहोहुरामअनुकूलारे ॥ १८९ ॥

टी०। रे भाई जीवराम कहतचलु इहां तीनिबार कहेताकौ यह अभिप्रायहै कि शरीरते रामदासन्हको चिन्हधारणकरु वचन तें नामकहु मनतेंस्मरणकरु इहां आयुर्बल व्यतीतकरनोरामनाम कहते सोई चलनोहै चेत रामनाम न कहैगो तो संसाररूपराजा के बेगारी पड़ेगो तब छूटते अति कठिनाई होयगी अर्थात् लोक मो कोऊ ऐश्वर्यवान बेगारपकड़ै है तो दोचारकोसगये छुट्टी होत है यहऐसो जालिमराजाहै किजाको बेगार पकड़ै है ताकोजन्मा-न्तर भयेहूं नहीं छोड़तयह जन्ममेंछूटबेकी कौन प्रतीतिहै ऐसा विचार रामकहतचलु अर्थात् चक्रवर्ती राजाको जो नाम लेतहै

ताको कोऊनहीं पकड़िसकत तैसेनाम लियेतें रघुबर को गुलाम संसार तोको जानिन पकड़िसकैगो जो संसारके बेगारमो पड़यौ है ताको स्वरूप देखावतहैं कहार को रूपककरि पुराना तो बांस अरु खटोली तीनकोनकी सोऊसरलनाम अचल और सबसाजअठ काठ नाम टेढ़ेइहां खटोलीरूपशरीर रजोगुण तमोगुण सतोगुण करि भयौहै तेहितें तिकोनकहे अरु नाशमानहैं तेहतें सरलकहे तथा पंचभूत अरुमनबुद्धि अहंकार जो आठ सोई यहखटोलीको जोड़तुल्य धारणकिये हैं वाही को अठकाठ कहे अरु खटोली को आधार बांस होतहै सो इहां अविद्याबांसरूप आश्रयहै सोपुरान नाम अनादिहै पर इहां पुरानकहबेको यह अभिप्रायहै किबहुत दिन को बांस टूटिजातहै तैसे अज्ञानकेइहां याहूको नाशहोतहै यहहेतु पुराने बांसकी समताकिये पूर्वकह्यौ जो खटोला सामग्री सहित सो कर्म रूपजो चन्दनाम बढ़ई कुटिलनाम दुखदाई ताने करिनाम बनायमन्द जोडोला सो सोलविलुनाम मोको चाहनहीं रह्यौ पर जैसे बेगारके सिरपर जबरदस्ती बोझाधरतहैं तैसेमोको देतभयौ अर्थात् कर्माधीन शरीरहै यह शास्त्रसम्मतहै तेह शरीर रूप डोला के लेचलने वाले विषम कहार नाम पांच ज्ञानेन्द्री सो मारनाम अपने अपने बिषयकी कामना सोई मदिरा तुल्य तेहितें माते नाम उन्मत्तभये पांवबटोरे नहीं चलतहैं अर्थात् कहार जब सम होतहैं तब डालीको ढोवनो बनेहै सोइहां विषमभयेतो मेल नहीं मिलेहै अरु मदिरा पियेतो चलबेको कौन ठेकानोहै याको यह भावभयौ कि विषम अरु उन्मत्त कहार के ऊपर चढ़िकरि चलेगो सो जहां जानो तहां पहुंचेगो नहीं बीचहीं गिरिकरि अंग भंगहोयगो तैसे ज्ञानेन्द्री रूप पांच कहार कामना रूप मदपिये शरीररूप डोलीको लैचले सोमेल मिलत नहीं अपने ओर खैंचा खैंचीकरि बीचही यह डोलीको तोड़ेंगे अर्थात् तेहडोली के ऊपर चढ़्यौजो जीवरूप सवार सो भगवतरूप नगरतक पहुंचने न पायो बीचही शरीररूप डोला नाश ह्वैगयो कहार अरु डोला दोऊको स्वरूपकहिकरि अवस्थाकी कठिनता देखावत हैं मंदनाम खाली पृथ्वी विलंद नाम ऊंची अभेरानगमें दरारजो फटेहै दलकन नाम धांका ऐसे राहमोविषमअरुमतवाले कहारलैचलेतेहतें झकझोरे नामअधिक डोलनेकरि अतिदुःख पावतभये इहां मन्द पृथ्वीतुल्य

तुच्छ्वासना भोजनवस्त्र मात्र विलंदृष्ट्वीतुल्य यह लोक विषैं राज ऐश्वर्य परलोकमें स्वर्ग सुखको कामना दरार तुल्य तेह इन्द्रिन्हके विषै अर्थात् दरारखाली होतहै तैसेविषय सारहीनहैं तथायांका तुल्यतेह विषय की प्राप्तिजेहमें गड़ेंते निकलिनसकै अरु तेहतेह इन्द्रिन्हको जोअपने विषयमें मनोरथ सोई भाकभोरा सदृशऔर ऊकठिन कहतहैं कांटातुल्य तै। नतौन विषयके नहीं प्राप्तभये जो दुखकुराय नाम गैंचो लोकोक्ति प्रसिद्धहै तत्तुल्य विषय प्राप्त को यतनकिये अरुसुफलनभयो अर्थात् कुरायमेंपड़ पैरटूटतहैतैसे इहां उपाय के निःफल भये मनोराज्य नष्टहोतहै लपेटन नाम जंगलके रास्तामें दोऊओरतें लताअरुडारचल्यौ जोसोसवारीकों रोकतहैं तैसेइहां जन्मान्तरीय कर्मलता डारतुल्य मनोरथ सिद्धहोने नहीं देत लोटननाम ढेला तेहिमें पड़ेतें कहार अरु सवार दोऊकों दुखहोत है तत्तुल्य इहां सुख के अर्थ अति परिश्रम तें नाना यत्न करनो यह रीति करि ठांवहिं ठांवहिं नाम रास्तामें जगह जगह बझाऊ नाम बझाव होतहै इहां ठांव २ तुल्य सुख के अर्थ तौन तौन, साधन्ह तेह करि बझाव सदृश आयुर्बल व्यतीतहोतहै पूर्वकहार को स्वरूप अरु राहको कठिनता कह्यौ तेह हेतु करि ज्यौं ज्यौं चलत हौं त्यौं त्यौं अपने निवासको जोगांव सो दूरहोतहै अर्थात् चलेतें ग्रामको निकट होनो चाहिये सो अधिक दूरहोतहै न भेंटननाम पहुंच्यौ नहींयाकौ यह अभिप्राय है कि प्रथम तो शरीररूपडोली अवलवाकों टूटते देर नहीं दूसरे कहार विषम ताऊपर कामना रूप मदिरा पिये औराह की कठिनता अनिर्वचनीय ऐसे सवारी पर चढ़िकरि यहजीव अपने निवास को गांवरूप जोभगवान तहांको चल्यौ चलनो तुल्य आयुर्बल व्यतीत होनो तो यह सामग्री करि कैसे पहुंचे जाने को पूरब जात है पश्चिम अर्थात् सब कर्तव्यता उलटी यहभाव है एक तो रास्ता कठिन दूसरे संग नहीं नाम साधगुरु परमेश्वर को अनुग्रह नहीं तथा संबल नाम कलेवा नहीं अर्थात् यह रास्ता कों भक्ति ज्ञान वैराग्यादि कलेवा तुल्यहैं सोऊ नहीं अरु गांवको नामभूल्यौ अर्थात् जाको राहभूलि है ताकौं जो गांवको नाम स्मरण रहे तो पूछत २ पहुंचतहै इहां भगवान रूपी ब्रह्माण्ड पहुंचवेको स्थान सोऊ भूल्यौ अर्थात् जिज्ञासाकिये साधुगुरु कृपाकरि तेहनगर को पहुंचावतहैं सो जिज्ञासा भी नहीं है रघुबर सब प्रकार करि यह डूब्यौ चाहत

है अपनो दीनबंधुता करि अब अनुकूल नाम सानुकूल होउ तुलसी दासके संसारत्रासको नाशकरो यह विनयहै ॥ १८९ ॥

मू०। सहजसनेहीरामसोंतैंकियोनसहजसनेह। तातेंभवभाजनभयौ सुनुअजहुंसिखावनएह। ज्योंमुखमुकुरबिलोकियेअरुचितनरहै अनुहारि। त्यौंसेवतहुंनआपनेमातुपितासुतनारि। दैदै सुमन तिलबासिकैअरुपरिपरिहरिरसलेत। स्वारथहितभूतलभरेंमन मेचकतनसेत। करिबीत्यौंअबकरतहैांकरिहैहितमीतअपार। कबहुंनकोउरघुबीरसोनेहनिबाहनहार। जासौंसबनातोफुरै तासौंनकरे पहिचानि। तातें कछुसमुभौनहीं कहा लाभकह हानि। सांचोजान्यौभूठकौंभूठेकहंसांचोजानि। कौन गयो कौनजातहैंकौनजैहैं करिहितहानि। बेदकह्यौबुध कहतहैं अरुहौंहुंकहतहैांटेरि। तुलसीप्रभुसांचौहितूतूहिएकीआंखिन हेरि ॥१९०॥

टी० जीव को उपदेश कहत हैं भगवत् बिमुख भये संसारके दुख भोगको पात्र होतहै संसार संबंध सब मिथ्या है सो दृष्टान्त देकरि देखावत हैं जैसे अपनो मुखमुकुर जो आईना तामो देखत हैं अरु चित्त अनुहारी नाम तेह तुल्य नहींरहत अर्थात् जैसे मुखको प्रति-बिम्ब शीशामो रहत है पर चित्त स्थिर नहीं होत अनेक विषयमो जातहै तद्वत्पुत्रादि जो सम्बन्धी सो सेवनकरतऊहैं पैअपने नहींहैं याको यहभावभयो कि यद्यपि मुखको प्रतिबिम्ब शीशामोदेखिपड़त है पर मुखशामो है नहीं अरु चित्तादि इन्द्री शरीर विषैहैं तेहको अपनो जानत है पर सर्वथा सो चित्तादिक विषयादिकनमो टिकत है पर स्थिर नहींरहत तैसे जितने संसारसम्बन्धी ताकोअपनोजानत है पै अपने नहींहैं तथा जैसे चित्तचंचलहै तद्वत जो जगतके सम्बन्धी सोऊएकत्र नहींरहते काहेकि नश्वरहैं अब संसारसम्बन्धी प्रीतिको मिथ्या देखावत हैं तिलको अनेक फूलतें बासित करिरसलै खरीको त्यागकरत हैं तैसे तिलतुल्य जो शरीर ताको पुष्पसदृश नानाविषय दै सुगन्धतुल्य पुष्टताकरि पश्चात् पौरुषतुल्यरसलैकरि जीर्णवृद्धावस्था को शरीर जो खरीसदृश ताको त्यागकरतहैं यहहेतु जितने हितवर्ग सो स्वारथरूप पृथ्वीमो भरेहैं शरीरतो देखबेको उज्ज्वलपैमनकाला है अर्थात् केवल बेषवचन करि प्रीतिरूप उज्ज्वलता देखिपड़तहै पर अन्तष्करण स्वारथरूप कालाहै करिबीत्यौनाम भूतकाल बहुतजन्म

ग्रहणकरि अनेकसम्बन्धकिये अरु बर्त्तमानमो अनेक नातोकरतहैं। तथा भविष्यमो अनेकन्ह हितमित्र करैंगे पर बिचारतें ऐसो निश्चय होतहै कि श्रीरघुबर समानकाहू स्थानमो कोऊ प्रीतिको निबाहन वालो नहींहै अर्थात् सर्वकाल एकरस प्रीति अरुसंगकेवल परमेश्वर को जीवतेंहै जेह परमेश्वरको ते सब नातो फुरैनाम प्रतीति होत है अर्थात् परमेश्वरको अंशचैतन्य जीव यावत् विद्यमान है तावत् सब नाते बनिरहेहैं सो सब सम्बन्ध को आधार जो परमेश्वर ताको तैने पहिचान्यो नहीं तेह बिमुखताको यह फल है कि लाभ कहा अरु हानि कहा यह कछु तू समझत नहीं अर्थात् अपनोभलो जो परमेश्वर को जानने अरु ताको भूलनो सोई हानि को अवधि सो जब अपने हानि लाभको भी ज्ञान नहीं तौपशुतुल्यहै ऐसी यह जीवकी मन्दताहै कि झूठको सांच सांचको झूठजानतभयौ अर्थात् परमेश्वर को स्वरूप आत्मा सतचित आनन्दरूप एकरस सोहै नहीं अरु झूठ जो देहादि सोई बस्तुहै यह प्रीतिभई यह रीतिकरि अपने हितनाम कल्याणको नाशकरि कौन गयौ भूतकालमों अरु बर्त्तमानमो कौन जातहै तथा भविष्यमो कौनजायगो अर्थात् अनादि जो संसारप्रबाह तामो भगवत्विमुखहोकरि जीवबहे फिरतहैं सोतू हृदयके आंखिन्ह तेंदेखु अर्थात् चर्म दृष्टिको मूंदिकरि ज्ञानदृष्टितेदेखिपड़तहै ॥१९०॥

मू०। एकसनेहीसांचिलोकेवलकोशलपाल। प्रेमकनौड़ोरामसोंनहिं दूसरोदयाल। तनसाथीसबस्वारथीसुरव्यवहारसुजान। आरत अधम अनाथहितको रघुबीरसमान। नादनिठुरसमचरशिखी सलिलसनेहनसूर। शशिसरोगदिनकरबड़े पयदप्रेमपथकूर। जाको मनजासौंबंध्यौताकोसुखदायकसोई। सरलशीलसाहिब सदापतिसरिसनकोई। सुनिसेवासहिकोकरेपरिहरैकोदूषण देखि। केहीदिवानदिनहीनकोआदरअनुरागविशेषि। खग शबरीपितुमातुज्यौंमानेकपिकोंकियेमीत। केवटभेट्योभरतज्यौं ऐसोकोकहुपतितपुनीत। देइअभागहि भागको कोराखैशरण सभीत। बेदबिदितबिरुदावलीकविकोविदगावतगीत। कैसेउं पांवरपातकीजेहिलईनामकीओट। गांठीबांध्योरामसोपरिख्यौ नरिषफिरखोट। मनमलीनकलिकिलविषी होतसुनतजासुकृत काज। सोतुलसीकियोआपनोरघुबीरगरीबनेवाज ॥१९१॥

टी०। पूर्वोक्त को दृढ़करत हैं कनौड़ो नाम आधीन रघुबर को

सांचो स्नेही कहि अवरन्हको मिथ्या दिखावत हैं जितने स्वारथीपिता पुत्रादि सो सब शरीरके साथीहैं अर्थात् पौरुषवानके ऊपर सब की ममताहै अरु देवता सब व्यवहारमो सुजाननाम सेवा पूजामो जो दक्ष तेहिपर प्रसन्न होतहैं पर आरत जो क्लेशभागी अधम जो पाप रूप अनाथ जाकों कोऊ शरण नहीं ऐसे जीवन्ह के हितती रघुबर समान कोऊ नहीं जीवकों समुझावत हैं कि नाद जो रागको शब्द सो निठुर नाम तेहि शब्दमों म्रगप्रीति करि बिबसहोत है ताकों सोई शब्द बधकरायदेतहै अरु समचरनाम तेहिनाद समान आचरण शिखीनाम चिरागको अर्थात् सलभतब प्रीतिकरि अपनेकोहोम करतहै पर चिरागकों कछुदयानहीं तथा सलिलनाम जलब्यतिरेक मछली एकक्षण शरीर नहींराखत परजल कों कछुक्रपानहीं यह तीनों शब्द चिरागजल स्नेहमो क्रूर नहीं तैसे चन्द्रमा यद्यपिसरोग नाम क्षयीरोग तथा कलंकयुक्त है पर चकोर की प्रीति दिन २ बढ़ै है तथा दिनकर जो सूर्य सो बड़े नाम जगतके कारण हैं तेहमो कमलकी ऐसी प्रीति कि सूर्य व्यतिरेक कबहूं बिकास नहीं होत पर सूर्यताहूकों जारिकरि छार करत हैं तथा पैद नाम स्वाती को मेघ जामो पपीहा की प्रीति अनिर्बचनीय है कि ब्रह्माण्ड के जलते निराश होय एकबूंदकी आशकरत है ताहूकों पाषाणन्हकीवर्षा करि मेघनाशकरतहैंयह हेतु चन्द्रमासूर्य मेघयंहतीनों प्रेमपथमोक्रूर हैं यद्यपि नादआदि मेघ पर्यंत एक छवो प्रेमपथमो क्रूरहैं अरु म्रग सलभ मछली चकोर कमल पपीहा यह छवो प्रेम पथमो सूर हैं काहे कि जाको मन जासों बंध्यौहै सो शरीर पर्यन्त नाश करत है पर ताकों सोसुखरूप देखिपरत है अब मुख्य फलित अर्थ कहत हैं कि पशु कीट जलजन्तु पक्षी जड़जो पुष्प यह जो नीच सब सोऊ जेह तें प्रीति किये तेह को अत्यन्त क्रूर करनो प्राण नाश पर्यन्त नहीं देखत अपनी ओरतें प्रीतिको निबाह करत हैं अरु नाद आदि जो छवो पूर्व कहे तेहतें विपर्यय सरल नाम कोमल शील जाको सर्बदा को खाविंद श्रीराम जू जेह सरिस क्रपाल दूसरो नहीं ताहू ते तू चैतन्य जीव दुर्लभ मनुज शरीर को पायकरि बिमुख होत है तोपशु पक्षी कीट मछली जड़ ताहूतें तू अति अधम अरु मंद बुद्धि भयो यह भाव है अब श्रीरामजूको गुण देखावत हैं दासके सेवाकोयथा भाव करि सहोनाम सत्य मानबो अरुदोष देख करि भी त्याग न

करनो तथा केहके दिवाननाम दरबार मो दिननाम दिन प्रति दीन जीवको आदर अरु तेह विषैं प्रीति विशेष करि होतहै गृद्ध शवरी निषादको प्रमाण दैकरि दीनबंधुता दृढ़ किये उदारता अरु शरणागत रक्षामुख्य जोगुण सो वेदादिको वचन प्रमाणकरि पुष्टकिये जेहरघुबरके निकट नामावलंबीजीव कैसऊनीच अरु पातकी होय पर ग्रहण होतहै जैसे कोऊ विश्वासकरि काहूको दियो द्रव्यगांठलो बांधिलै खरो खोटो न परखे तद्वत् अब अपनो प्रमाण देखावतहैं कि सनमलीन कलिनिषैं किल्बिषरूप होतहै और जीव सुनिकरि जाके किये करणी को सोऊ जो तुलसी ताको अपनो करतभये ऐसे श्री रघुबर गरीबनेवाज हैं तेह स्वामीतें जो जीवं बिमुखहोय सो शूकर श्वकरतें अधिक मन्दहै ॥ १९१ ॥

मू०। ज्यौंपैजानकीनाथसौंनातोनेहननीच । स्वारथपरमारथकहा
कलिकुटिलबिगोयोबीच । धर्मबरणाश्रमनिकेपैयतपोथिहीपुराण । करतबबिनबेषदेखिये ज्यौंशरीरबिनप्राण । वेदबिदित
साधनसबैसुनियतदायकफलचारि । रामप्रेमबिनजानिबोजैसे
सरसरिताबिनवारि। नानापथनिर्बाणकेनानाबिधानबहुभांति।
तुलसीतूमेरेकहेजपुरामनामदिनराति ॥ १९२ ॥

टी०। हेजीव नीच ज्यौपैतैं जानकीनाथ सों नातो नाम सेवक सेव्यभाव अरु नेह नामभक्ति न कियो तो स्वारथ परमारथ कोा कहा कहनो कुटिल जो कलि सो बीचहीमो बिगोयो नाम गुप्त करैगो अर्थात् स्वारथ परमारथरूप सिद्धिभयेके पहिले तोकों नाश करैगो कालके प्रमाणकरि बर्णाश्रमधर्म पुराणमो रहिगयो जोकोई ग्रहण कियोहै सो करनो व्यतिरेक बेषमात्र देखि पड़ेहै जैसे प्राणके बिना शरीर अन्य जोअनेक साधनसो भगवत् अनुखंग व्यतिरेका सबव्यर्थहैं यद्यपि शास्त्रमो अनेकमार्ग कह्यौहै तथापि तुलसी कहतहै कि हेजीव तूमेरेकहते और कर्त्तव्यता त्यागकरि दिनरात रामनामजपु॥१९२॥

मू०। अजहुंआपनेरामकेकरतबसमुझतहितहोय।कहंतूं कहंकोशल
धनीतोकोंकहा कहतसबकोइ । रीझिनिवाज्यौ कबहितूकब
खीझिदई तोहिगारि । दर्पणबदननिहारिकैसु बिचारमानि
हियहारि। बिगरीजन्मअनेककीसुधरतपललगैनआधु। पाहि
कृपानिधिप्रेमसौंकहेकोनरामकियोसाधु।बांलमीककेवटकथा
कपिभीलभालुसनमान । सुनिसन्मुख जोनरामसोंतेहिकोउप

देखहिंग्राम। कासेवासुग्रीवकीकाप्रीतिरीतिनिरबाहु। जासु
बंधुबध्योब्याधज्यौंसोसुनतसोहातनकाहु। भजनबिभीषणको
कहाफलकहादियोरघुराज। रामगरीबनेवाजकेबड़ीबांहबोल
कीलाज। जपहिंनामरघुनाथकोचरचादूसरीनचालु। सुमुखसु-
खदसाहिबसुधीसमरथकृपालनपालु। सजलनयनगदगदगिरा
गहबरमनपुलकशरीर। गावतगुणगणरामकेकेहिकीनमिटी
भवभीर। प्रभुकृतज्ञसर्वज्ञहैंपरिहरुपाछिलीगलानि। तुलसी
तोसोंरामसोंकछुनईनजानपहिचानि॥ १९३॥

टी०। जीवनकों उपदेश करत हैं कि जितनी आयुर्बल बाकी है तितनीकरि अपने आत्मा जो श्रीरघुबर ताकी कर्तव्यता जो रुसुझै तौ अवश्यकरि हितहोय बिचार तौ करु कहां तू अति निंद्यजीव कहां ब्रह्मादि के ईश्वर श्रीरामजू पर तोको लोग सब कहा कहत हैं अर्थात् याको दास ब्रह्मादि याचत हैं सो तेरे ऐसे तुच्छ जीवकों जगत रामदासकहतहैं भगवान तोयह जीवकों बड़े भाग्यतें अपनो करतहैं तथा पियाको अपनी ओरते सन्मुख रहनो उचितहै रेजीव तोकों रीझिकरि कब श्रीरघुबर निवाजे अथवा खीझिकरि कब गालीदिये अर्थात् रीझिखीझि दोऊ जाकौं स्वामी अपनो मानत है तेहिके ऊपर करत है सो जब दास होबे योग्य कर्तव्यता करे तब स्वामी अपनो मानतहै सोतू पहिलेही विचार रूप दर्पणमें अपनी योग्यतारूप मुख देखिकरि हृदयमें हारिमानेहै अर्थात् हमपरमेश्वरके शरणयोग्य नहीं यहबूझि आये विमुख होतहै सो न चहिये अपने ओरते यथाशक्ति स्वामीकी प्रसन्नता की कर्तव्यता करत रहै चेतकहै कि जो स्वामी अपनो न किये तो अपनी कर्तव्यता सबव्यर्थ होयगी सो ऐसो मति बूझि एकैबार प्रीतितें है कृपानिधि माहि इतने कहबे मात्रकरि श्रीरघुबर केहकौं न साधु किये तथा सन्मुख होतेमात्र अनेक जन्मकी बिगरीताकों सुधरतनामबनते आधिपलको देरनहीं होत अर्थात् अपनी ओरते निश्छलह्वै जोशरण होय तो कृतार्थ रूपहै पूर्व कह्यौ जो सिद्धान्त तामें बाल्मीकादिको प्रसंग प्रमाण देत हैं यह प्रसंगन्हकौं सुनिकरि जो सन्मुख नहीं भयो तौ उपदेशको अधिकारी नहींहै सुग्रीवको प्रसंग देखावत हैं कि आड़ ह्वैकरि बालीकोमारनो यहसुनि काहूकौं प्रियनलग्यौ अर्थात् आप निन्दा सहिकरि सुग्रीवको कृतार्थकिये तेहिकी कौन सेवाअरुप्रीति

कीरीतिको कह। निबीहदेख्यौ अर्थात् पहिले सन्मुख है। ते सर्बकाम ना पूर्ण किये ताको सेवा अरु प्रीतिरीतिनको निबाहतो पीछे जानि पर्यौ सुग्रीवसदृश विभीषणकों प्रसंग बनावत हैं पूर्व कह्यौ जो अनेक गरीबनिवाजेते समुझकरि राम नामजपु दूसरी चरचा मति चलाउ कैसे रघुबर हैं शुभनाम मंगलरूप सुमुखआदि सबविशेषणहैं गहबर नाम ग्लानोको गुणस्मर्णकरि भर्यो जोमन ऐसी दशाते गुणगावते संसाररूपभीरनाम बोझा केहकोन नाशभयो है रेजीव पूर्व कह्यौ जो उपदेश सो विचारि शरण ग्रहणकरु प्रभु ज्ञात हैं नाम जीवकेथोड़े कर्तव्यताको बहुतमानत हैं तथा सर्बज्ञ हैं ऐसोजानि पाछली ग्लानि त्यागकरु अर्थात् विमुख होकरि आयुर्बल व्यतीत भयो ताकोगैरति मतिमान जितनीरहिगई है तितनो प्रभु के प्रसन्न करबेको बहुत है चेत यहकहे कि राजन्हके निकट काहूके बसीलाकरि जानो होतहै सो चिन्तामतिकरु रेतुलसीतोसों अरु रामजूसों कछु नई जानपहि- चान करनो नहीं है अर्थात् परमेश्वर ते जीव को अनादि सम्बन्धहै ऐसो निश्चयकरि भगवतशरण होनो मनुष्य शरीरको फलहै ॥१९३॥

मू०। जोअनुरागनरामसनेहीसों। तौलह्योलाहुकहानरदेहीसों। जो तनधरिपरिहरिसबसुखभयसुमतिरामअनुरागी। सोतनपाइ अघाइकियेअघअवगुणअधमअभागी। ज्ञानबिरागयोगजपतप मखजगमुदमगनहिंथोरे। रामप्रेमबिनुनेमजायजैसेमृगजल जलनिधिहिलोरे। लोकबिलोकिपुराणबेदसुनिसमुझिबूझिगुरु ज्ञानी। प्रीतिप्रतीतिरामपदपंकजसकलसुमंगलखानी। अजहुं जानिजियहारिमानहियहोइपलकमहंनीको। सुमिरुसनेह सहितहितरामहिंमानमतोतुलसीको ॥ १९४ ॥

टी०। भगवत शरण व्यतिरेक मनुष्य शरीर व्यर्थ है जौने शरीरते सब संसारके सुखको अरु नर्कादिभय त्यागकरि सुबुद्धि जीव रामा- नुरागीहोतहै तौनेशरीरको पायकरि अघाय नाम भरिपेट पाप अरु अवगुण करत जो जन्मखोयौ ते अधम अरु अभागेहैं चेतकहे कि ज्ञानादि अनेकसाधनहैं केवल शरणागत होनेमें कौनआग्रहहै तो सुनु ज्ञानादि आनन्दप्राप्ति के मार्ग जगतमें थोड़े नहींहैं पररामप्रेम बिन जितने साधनके नेमहैंसो जायनाम व्यर्थजानु जैसे मृगतृष्णा के समुद्रहिलोरेस्नानको सुख अरु जल न मिलेगो तैसे भगवत् अनुराग व्यतिरेक जीव को तीन कालमें सुख नहीं लोक बेद दोऊ प्रमाण

है सो लोककी वाणी अरु वेद पुराणकी आज्ञा सुनि समुझि येह जानिकहते बूझि करि केवल रामानुराग मंगलरूप निश्चय होतहै जो कालव्यतीतभयौसो व्यर्थगयो अबहूंपूर्व जो कह्यो सो जियमो जानि संसारके ओरते हृदयसो हारिमान प्रीतिपूर्वक रामजू को स्मर्ण करु तो पलमात्रमो तेरोनीको नाम कल्याणहोयगो यह तुलसीको मतहै सो अपने भलेकी चाहहोय तो मानिले ॥ १९४ ॥

मू० । बलिजाउंहौंरामगुसांईं । कीजियेकृपा आपनी नाईं । परमारथ सुरपुरसाधनसबस्वारथसुखदभलाईं । कलिसकोपलोपीसुचाल निजकठिनकुचालचलाई । जहंजहंचितचितवतहिततहंनितनव बिषादअधिकाई । रुचिभावतीभभरिभागहिंसमुहाहिंअमित अनभाई । आधिमगनमनब्याधिबिकलतनवचनमलीनझुठाई । एतेहुंपरतुमसोंतुलसीकोप्रभुसकलसनेहसगाई ॥ १९५ ॥

टी० । बलिजांव हेरघुबर कृपाकरो अपनाई नाम अपने ओर देखि कर परमारथ जोमोक्ष अरु देवलोकको जो साधनतथा स्वारथसुखद नाम यह लोक के सुखदाई जो आचरण ऐश्वर्य्यादि भलाई आदि सोकरि जो सुचालता कोपयुक्त जो कलिकाल सो लोपो नाम नाश करतभयो अपनी जोकठिन कुचाल सोजगत्मो चलायदियो जहां २ यह चित अपनो हित देखत है तहां २ नितप्रति नवीन विषाद को अधिकाई देखपरत है तथा भावती जो रुचिसो भभरि भागहिनाम कलिकालते डरि दूरगई अमित जो अनभाई नाम जेहकी रुचिनहीं सो समुहाहिं नाम प्राप्ति होति है आधि जो मानसिक पीड़ा तासो डूब्योहै मनरोग करि व्याकुल शरीर झुठाई तें मलीन वचन अर्थात् कलिकाल के प्रभावतें काय वचन मन तीनों बिगाड्यौ एतेहुं पर नाम ऐसउ दशासो तुलसीको सकल सनेहको जो सगाईनाम नाता को ममता सो हे प्रभु तुमहीते है जैसी बूझिपड़े सो करो ॥ १९५ ॥

मू० । काहेको फिरतमन करतबहुजतन । मिटैनदुखबिमुख रघुकुल बीर । कीजैकोटिउपायत्रिबिधतापनजाइकह्यौजोभुजउठाय मुनिवरकीर । सहजटेवबिसारितुहिंधौंदेखुबिचारिमिलैनमथत बारिघृतबिनछीर । समुझि तजहिभ्रमभजहि पद युगल सेवत सुगमगुणगहनगंभीर । आगमनिगमग्रंथऋषिमुनिसुरसन्तसब- हीकोएकमतसुनुमतिधीर । तुलसिदास प्रभुबिनु प्यास मरैपशु यद्यपिहैनिकटसुरसरितीर ॥ १९६ ॥

टी०। रे मन रामजूतें विमुख त्रैताप रूप दुख कोटिन्ह यत्न किये नहीं मिटतसो भुजा उठायकरि सुनियेंछ कीर नाम शुक कह्यो है अर्थात् श्रीमद्भागवत विषें प्रतिज्ञाकरि शुकदेव जू बार २ सिद्धान्त किये कि भगवत विमुखजीवको त्रिकाल सुख नहीं सहज टेव नाम स्वाभाविक हठविवर्ण करितुहीं यों विचार करिदेख कि जलकेमथे तें घीनहीं मिले है बिनादूधमथे तद्वत् अनेक साधन जलरूप मथेतें जीवको सुखरूप घृतनहीं मिलत भगवत अनुरागरूप दूधबिना ऐसो समझ अनेक साधनको भ्रमजानि त्यागकरि दोऊ चरण कमल कों भजनकरु कैसेहै चरण कमल सेवत सुगम नाम जाके सेवामो कुछ परिश्रम नहीं अरु गंभीर जो गुण तेहते गहन नाम सघन अर्थात जेहचरणको सर्वगुण सेवन करतहैं बेदआदि सबको एक यहीमत निश्चयहै सोमतिको धीरकरि सुनुरे तुलसीदास पशुजो वृषभादिसो गंगाजू के निकटऊ रहै पर अपने स्वामी व्यतिरेक प्यास तें मरत है अर्थात् गंगाजू के तटसो पशुबांध्यौ है जो वाको स्वामी खोलि करि जलन पिलावै तो कैसेवाकी प्यास जाय तद्वत् यहजीव अविद्याकरि बंध्यौ है यद्यपि आनन्द रूप प्रभु के निकट है तथापि तेह स्वामी के अनुग्रह व्यतिरेक बंधन छुड़ाय करि तेह सुख को भोग नहीं करि सकत यह सर्व सम्मति विचारि भगवत शरण होनो यही जीव को महान पौरुष है ॥ १९६ ॥

मू०। नाहिन चरणरति ताहितेंसहों बिपति कहत श्रुतिसकल सुनि मतिधीर। बसै जोशशिउछंगसुधास्वादितकुरंगताहिको भ्रम निरखिरविकरनीर। सुनियनानापुराणमिटतनहिंअज्ञानपढ़िय नसमुझिय जिमिखगकीर। बूझतबिनहिं पासलेमर सुमनआस करतचरततेइफलबिनुहीर। कछु न साधनसिधिजानौंन निगम बिधिनहिं जपतपमनसमननसमीर। तुलसिदासभरोसपरमकरुणा कोसप्रभुहरिहैबिषमभवभीर ॥ १९७ ॥

टी०। आपके चरण कमलसो प्रीति नहीं ताही तें अनेक बिपत्ति सहतहैं यहीसकल बेद अरु मतिधीर मुनि सब कहतहैं काहे कि जो कुरंग नामहरिण चन्द्रमा के उछंग नामगोदमो अमृतको स्वाद लेत बसतहै ताको क्या मृगतृष्णा देखिकरि भ्रमहोयगो किंतु नहीं इहां काकु है अर्थात् जंगली हरिण को मृगतृष्णा विषें जलको भ्रम होतहै अरु चन्द्रमा को वाहन जो मृग अमृत पान करत है सो मृग

तृष्णादेखि काहूको भूलितैंसे भगवत बिमुखको संसार प्रवाहकोसत्य के प्रतीतितें नानादुख होतहैं अरु भगवत अनुरागी के दृष्टिमें शरी-रादिवस्तु है नहींतो कैसे दुखहोय तेहभ्रम के होवेमो हेतु कहत हैं कि यद्यपि नानापुराण सुनत औ पढ़तहैं परअज्ञान नहीं मटत सो यह हेतु कि जैसे खगपच्छी तैसे सुनत पढ़त परवाको तत्व नहीं समु-झत तथा सो खगाकांदा ब्यतिरेक बूझतहै अरुसेमरके फूलमें आश करिके हीरनाम सारांश बिना जो फल ताहीको चरत नाम चोंचतें काटत है तद्वत यह जीव सारहीन जो संसाररूप देहादि को भोग बिषयादि ताको रसरूप मानि आशक्तहोय अपने अज्ञानतें बंधतहै हे रघुबर मैं सब साधन को सिद्धि अरु बेदको बिधान नहीं जानत हौं। तथा जप तपस्याकरि मनकों अरु प्राणकोंबस न कियौ तुलसीदासकों केवलयही भरोसहै कि प्रभुपरम करुणाकेकोश नामभण्डारहैं कठिन जोसंसारको बोझा सो अपने कृपालुताकरि दूरकरैंगे ॥ १९७ ॥

मू०। मनपछितैहै अवसरबीतें। दुर्लभदेहपाइ हरिपदभजु करमबचन
अरुहीतें। सहस बाहुदस बदन आदिनप बचेनकालबलीतें।
हमहमकरि धनधामसंवारेअन्तचले उठिरीतें। सुतबनितादि
जानि स्वारथरतनकरुनेहसबहीतें। अन्तहु तोहि तजहिंगे
पामरतून तजहि अबहीतें। अबनाथहि अनुरागजागुजड़ त्यागु
दुराशाजीतें। बुझैनकामअग्नितुलसी कहुंबिषयभोगबहुघीतें॥१९८॥

टी०। मनको उपदेश करतहैं श्रीरामजूको भजु नहीं तो पौरुष गयेपश्चात्ताप करैगो कालके वेगतेंकोऊ बचत नहीं तथा परलोकविषैं कोऊ संगीनहीं केवल अपनी कर्तब्यता संग रहति है जेह पुत्रादि सो तूममता कियोहै सोतोकों अन्तमें त्यागकरैंगे तेहतें तूहीछोड़ु यह उचितहै चेतकहै कि हमने छोड़े अथवा वानेछोड़्यौ दोऊप्रकार त्यागभयौ सोनहीं अपने छोड़नेमो यह बिशेष है कि जोवस्तु अपने को छोड़ैहै तांके वियोगमें दुखहोतहै अरुताको आपछोड़ेसो त्याग सुखरूपहै यह बड़ो अंतरहै पूर्वोक्त को विचारि स्वामी के अनुराग सो जागुरेजड़ दुराशा जो संसारतें सुखकी आशासो जीवतेंत्यागकरु चेत कहै कि विषय भोगतें तृप्त होकरि पश्चात छोड़ूंगो सो ऐसी मतिबूझ काहे कि कामना रूप अग्निविषै भोगघीतें बुझै नहीं अधिक लहरत है ऐसोविचारि संसार सम्बन्धी कामना त्यागकरि रामजूको भजुयह तुलसीकोउपदेशहै ॥ १९८ ॥

मू०। काहेको फिरत मूढ़ मन धायो। तजि हरिचरण सरोज सुधारस
रविकरजल लय लायो। त्रिजग देव नर असुर अपर जगयोनि
सकल भ्रमि आयो। गृह बनिता सुत बंधु भए बहु मातु पिता जिन्ह
जायो। याते निरय निकाय निरंतर सोइ इन तोहिं सिखायो। तव
हित होइ कटहि भवबंधन सो मग तोहि न बतायो। अजहुं विषय
कहं यत्न करत यद्यपि बहु बिधि डहकायो। पावक काम भोग घृत
तें शठ कैसे परत बुझायो। विषयहीन दुख मिले बिपति अति सुख
सपनेहुं नहिं पायो। उभय प्रकार प्रेत पावक ज्यों धन दुखप्रद
श्रुति गायो। छिन छिन छीन होत जीवन दुर्लभ तनु वृथा गंवायो।
तुलसिदास हरि भजहि आस तजि काल उरग जग खायो १९९॥

टी०। मनतें कहतहैं कि भगवत् विमुख होकरि मिथ्याविषयके
अर्थ नानाप्रयास करै है सो काहे जेहजगत सम्बन्धी को अपनो
हित मानत है सो कोउ हितहै नहीं यह विचारकरि देखु जहां
जहां कर्म वस जन्मभयौ तहांतहां सबसंबंधी मिल्यौपर जेहकर्त-
व्यतातें तोको संसाररूप दुखहोय सोई सब सिखाये तेरे कल्याण
को उपदेश काहूने न कियौ अनेक जन्म ग्रहणकरि संसार प्रवाह
के दुखको अनुभवकियौ यद्यपितेहि विषयको यत्नकरत है तद्यपि
बहुत प्रकार डहकायौ नाम ठगो गयौ अर्थात् इन्द्रिन्ह के विषय
भोगकरि बहु जन्म खोयौ वही भोगकरि तृप्तहोवेको चाहतहै सो
विचार तो कामनारूप अग्निभोगरूप घीतें कहूं बुझेहै किन्तु नहीं
जेहजन्ममें विषयहीनरह्यौ तहांदीन ह्वैकरि अनेक विपत्ति भोग
किये स्वप्नहु में सुख न मिल्यौ अरु जेहि जन्ममें कर्मवस कछु धन
मिल्यौ ताकों तू सुखरूप मानतभयौ सो अज्ञानता करि काहे कि
द्रव्यकों दुखरूप वेदगावैहै उभय प्रकार नाम मिले अरुनहीं मिले
प्रेत पावक ज्यौंनाम राक्षसकी आगिदूरतें देखिपड़ै सत्यअग्नि
मानकरि जो जीवगहन करवेकों चाह्यौ तहां आगिहै नहीं वाके
मुखकी ललाई आगि सदृशभासैहै तो कैसे मिले परिश्रम मात्रफल
होतहै और जो निकट जाय मिल्यौतो शरीरको नाश होयगो
तैसें यावत् धनकी प्राप्ति नहीं तावत् अनेक प्रयासकरि दुखहोतहै
अरु भाग्यबसजो मिल्यौतो तेहके निमित्त चोरबटपार राजाआदि
सब जीवको ग्राहक होतहैं तथा रक्षाके निमित्त जन्मभरि दुखभोग अरु
अग्न्यादिकरि जो नाश भयौ तो मरणान्त क्लेश होतहै यहरीतितें

प्राप्तअप्राप्त दोऊमें दुखरूपधनको कहैजगतके धंधाकरि छणछण जीवनको नाशहोतहै दुर्लभजो मनुष्य शरीरसो व्यर्थ खोवतहै यह विचार तुलसीदास कहतहैं कि सब आश त्यागकरि भगवान को भजुसमस्त जगत कों कालरूपी सर्पखाये जातहै अर्थात् जब काल माथेपर देखिपरतहै तब भगवान स्मरण होतहैं यह हेतुतें जगत कों नाशवान जानि परमेश्वर कों भजनकरनो एतनोही कल्याण को हेतु है ॥ १९९ ॥

मू० । तांबेसोंपीठिमनहुंतनपायौ । नीचमीचुजानतनशीसपरईश
निपटबिसरायौ । अवनिरवनिधनधाम सुहृदसुतकोनइन्हहिं
अपनायौ । काकेगयेभयेसंगकाकेसबसनेहछलछायौ । जिन्ह
भूपन्हिजगजीतिबांधियमअपनीबांहबसायौ । तेऊकालकलेऊ
कीन्हेतूगिनतीकबआयौ । देखुबिचारिसारकासांचोकहा
निगमनिजगायो । भजहिनअजहुंसमुझितुलसी तेहिजेहि
महेशमनलायौ ॥ २०० ॥

टी० । तांबे सों पीठि नाम पीठ्यौ तामेके तबक सदृश मानो शरीर पायौहैपर रेनीचमाथेपर मृत्युनहीं जानतणहते परमेश्वर को निपट बिसरण कियौ जेह कों अपनो जानतहै सो सयनश्वर ईश्वरताकों पुष्टकिये अरुसबसंबंधीको स्नेह छलरूपहै यह जनाये बड़े बड़े को नाशभयौ तू कौने गिनतीमेंहै जो आयुर्बल गयो सो व्यर्थ भयौ अबहूं तो बिचारकरु सार अरुसत्यबेदकेहकों गावे है सो परमेश्वर को अजहूं नहीं भजनकरे है समुझिकरिके तुलसी जेहसो शिवजू ऐसो ईश्वर मन लायो है तेहतें बिमुखहोनो बड़ो हानि है ॥ २०० ॥

मू० । लाभकहामानुषतनपाये । कायबचनमनसपनेहुं कबहुंकघटत
न काजपराये । जो सुखसुरपुर नरक गेहबन आवतबिनहिं
बुलाये । तेहसुखकहंबहुयत्नकरतमनसमुझतनहिंसमुझाये ।
परदारापरद्रोहमोहबसकियेमूढ़मनभायोगर्भबासदुखराशि
जातनातीब्रबिपतिबिसराये । भयनिद्रा मैथुनअहार सबके
समानजगजाये । सुरदुर्लभतनधरिन भजेहरिमदअभिमान
गंवायें । गईनिजपर बुद्धिशुद्धह्वैरहे रामलयलाये । तुलसि
दासयहिअवसरबीतेकापुनिकेपछताये २०१ ॥

टी० । मनुष्य शरीर ग्रहणको परोपकार करनो यह सुखफल

है जेहि सुख को सुख मान्यो है सो सब स्थान अरु सब योनि मों मिलत है परन्तु समुझाये समुझत नहीं यह तेरी अधमाई है जन्म मरण रूप दुखभूमि करि सर्वथा निषेध कर्म करत है मैथुनादि जो सुख सो शूकर कूकर योनिमें भी तुल्य है मनुष्य शरीर की प्रशंसा केवल भगवत भजन के अर्थ है अपनी पराई बुद्धि गई नहीं तेहि हेतुते अन्तःकरण शुद्ध है भगवत् चरणमें प्रीति लायो नहीं तौ तुलसीदास कहत हैं कि यह औसर बीते फेर पछताये कहा होय अर्थात् मनुष्य शरीर नष्टभये जब दूसरी योनिमें जायपड़ो तब यह जीव नष्टभयो फेरकछु याको उपाय नहीं हो सक्ता ॥

मू०। काजकहा नरतनधरि सास्यो। परउपकार सार श्रुतिको जोतो धोखेहुमें न बिचास्यो। द्वैतमूल भयशूल शोक फल भवतरु टरै न टास्यो। रामभजन मति तीक्षण कुठार लै सो नहिं काटि निवास्यो। संशय सिन्धु नाम बोहित भजि निज आतमा न तास्यो। जन्म अनेक विवेकहीन बहु योनि भ्रमत नहिं हास्यो। देखि ज्ञान को सहज सम्पदा द्वेष अनल मन जास्यो। समदमदयादीन पालन शीतल हिय हरि न संभास्यो। प्रभुगुरु पिता सखा रघुपति तैं मनक्रम वचन बिसास्यो। तुलसिदास यहि त्रास शरण राखिहिं जेहिं गीध उधास्यो ॥ २०२ ॥

टी०। पूर्वोक्त को दृढ़ करत हैं संसार रूपी वृक्षको द्वैत जो शरीर विषैं आत्माबुद्धि सोई मूल है अरु कालादिको भय त्रैतापको शूल शिरके नाशकारि जो शोक सोई फलरूप ऐसो जोटल सो टारे न टरत है ताके काटवे को राम भजन चोखो टांगा है ताको जो मैंने काटि करि दूर नहीं कियो यह मेरो अभाग्य है संशय रूप समुद्रको नामरूप जहाजको भजिनाम सेवनकरि अपने आत्माको पार नहीं कियो अनेक जन्म विवेकहीन ह्वै बहुतयोनि भ्रमणकरत अद्यापि हास्यौ नहीं जोनकरबे कौ सो कियो अरुजो करबेको सो छोड्यो ऐसोमैं अधम हौं। सब हितकारी अरु पूज्यरूप जो रघुबर ताको भलीप्रकार भूल्यो अर्थात् सब निषेध की मूर्ति मैं ही हौं तथापि यह आसरो पड्यौ जो तुलसीदास ताको सोई शरणमें राखेंगे जिन्ने गृद्धको उद्धारकियो है यह प्रतीति है ॥ २०२ ॥

मू०। श्रीहरिगुरुपदकमल भजहु मन तजि अभिमान। जेहि सेवत पाइय हरि सुखनिधान भगवान। परवा प्रथम प्रेम भिक्षु राम मिलन

अतिदूरि। यद्यपिनिकटहृदयनिजरहैंसकलभरिपूरि। दुइजि
द्वैतमतिछांड़िचरहिंमहिमंडलधीर। बिगतमोहमायामद
हृदयबसतरघुबीर। तीजत्रिगुणपरपरमपुरुषश्रीरमणमुकुन्द।
गुणसुभावत्यागेबिनुदुर्लभपरमानन्द। चौथिचारिपरिहरहु
बुद्धिमनचितअहंकार। बिमलबिचारपरमपद निज सुखसहज
उदार। पांचइंपांचपरसरसशब्दगन्धअरुरूप। इन्हकरकहान
कीजैबहुरिपरबभवकूप। छठिषटवर्गकरियजयजनकसुतापति
लागि। रघुपतिकृपावारिबिननहींबुताइ लोभागि। सातें
सप्तधातुनिर्मिततनकरियबिचार। तेहितनकेरएकफलकीजिय
पर उपकार। अठई आठप्रकृति पर निर्बिकार श्रीराम।
केहि प्रकारपाइयहरिहृदयबसहिंबहुकाम। नवमीनवद्वार
पुरबसिजेहिनआपुभलकीन। तेनरयोनिअनेकभ्रमतदारुण
दुखदीन। दसइंदसहुंकरसंयमजोनकरियजियजानि। साधन
बृथाहोइहिंसबमिलहिंनसारंगपानि। एकादशीएकमन बस
कैसेवहुजाइ। सोइब्रतकरफलपावैआवागमननसाइ। द्वादशि
दानदेहु असअभयहोइत्रयलोक। परहितनिरतसो पारन
बहुरिनब्यापैशोक। तेरसितीनिअवस्थातजहुभजहुभगवन्त।
मनक्रमवचनअगोचरब्यापकब्याप्य अनन्त। चौदसि चौदह
भुवनअचररूपगोपाल। भेदगयेबिनारघुपतिअति नहरहिंजग
जाल। पुनिउप्रेमभक्तिरसहरिरसजानहिंदास। समशीतल
गतमानज्ञानरतविषयउदास। त्रिविधिशूलहोलियजारिय
खेलियअबफागु। जौंजिय चहसिपरमसुख तौ यहिमारग
लागु। श्रुतिपुराणबुधसम्मतचांचरिचरितमुरारि। करि
बिचारभवतरियपरियन कबहुंयमधारि। संशय शमनदमन
दुखसुखनिधानहरि एक। साधुकृपाबिन मिलहिंनकरिय
उपायअनेक। भवसागरकहंनावशुद्धसन्तनकेचरण। तुलसि
दासप्रयासबिनुमिलहिंरामदुखहरण॥ २०३॥

टी०। जीवके कल्याण को मार्ग उपदेश करतहैं श्रीहरिरूपश्री गुरुताके चरणकमलको भजनकरु रे मन पै अभिमान त्यागकरि अर्थात् अभिमान ते भजन फल नहीं देत जेहि गुरु के सेवनकिये सुखरूप जो भगवान ताको यहजीव पावत है अब फाल्गुन मास को शुक्ल पक्ष ताके तिथिन्ह की संख्या करि शुभ साधन सबकहत

है जैसें प्रथमदिन परिवा होत है तैसें इहां प्रथम प्रेम नाम पर्व अवस्था को अनुराग तेहि बिना श्रीरामजू को मिलनो अति दूर है यद्यपि हृदयमो पूर्ण है अर्थात् प्रेमबिना कोऊसाधनमों प्रवृत्ति होत नहीं द्वितीयारूप द्वैतबुद्धि त्यागकरनो तेहद्वैतको छोड़े आपै मोह माया छूटै है अरु हृदय मो परमेश्वर टिकत हैं तीनि रूप जो त्रिगुण तेहतें परे लक्ष्मीकान्त हैं सो गुण स्वभाव त्याग किये व्यतिरिक्त परमानन्द नाम परमेश्वर स्वरूपानन्द दुर्लभ हैं चतुर्थी रूप मन बुद्धि चित्त अहंकार ताको स्वरूपयहहै कि संशयमनको निश्चय बुद्धिको धारणा चित्तको आग्रह अहंकार को यह भेदरूप जो चारोंकी वृत्तिको त्यागकर तब निर्मलविचार सोइरूप अपने स्वरूपको प्रकाश सुख सहजनाम स्वाभाविक एकरस उदार नाम महान् जेहके ऊपर दूसरो सुखनहीं सो आविर्भाव होतहै अर्थात् बुद्ध्यादिकी वृत्तिमिटेतें परमेश्वरतें व्यतिरिक्त दूसरी वस्तु है नहीं यह स्फूर्ति होतिहै पञ्चमीरूप पांच जोविषय त्वचाको स्पर्श जिह्वा को रस कर्णको शब्द नासिका को गन्ध नेत्र को रूप इनको कहा न करनो कियेतें संसारकूप मो पड़ै है अर्थात् मुख्य जो पञ्चज्ञा-नेन्द्रिय ताकों अपने अपने विषय तें फेरि करि बसकरे षष्ठी रूप षटवर्ग नाम काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर ताकों जीतै श्री राम जू मेरे पति होंय यह निमित्त अर्थात् यावत् कामादि के आधीन है तावत् रामजू स्वामी नहींहोते अरु रघुपतिको कृपा रूप जल बिना लोभरूप डाढ़ाग्निग्रस्यो है सो बुझात नहीं सप्त-मीरूप सप्तधातुनाम हाड़ चाम रक्त मांस मज्जा मेद शुक्र याही करि निर्मित यह शरीर है ताको विचार करि परोपकार नाम जीवमात्र पर दया करनो यही फल है अष्टमी रूप आठ प्रकृति नाम पञ्चभूत मन बुद्धि अहंकार यहतें परे विकाररहित श्रीराम रूप नाम शुद्ध सतचित आनन्द मूर्ति हैं तेहि हरि कों केहप्रकार पावैं काहे कि हृदयमो अनेक कामबस्यो है अर्थात् शुद्धरूप पर-मेश्वर को मलीन हृदयमो कैसे आविर्भाव होय नवमी रूप नव द्वारनाम नेत्र कर्ण नासिका दो दो सो छवो अरु मुख लिंग गुद यह तीनछिद्र यही नव दरवाजाको पुर जो देह तामें बसिकैजाने अपनो भलो न कियौ सो अनेक योनि भ्रमनकरत कठिन दुखतें दीनरहत है अर्थात् मनुष्य शरीर अति दुर्लभ ताकों पाय अपनो

कल्याण न किये तो फेर जन्म मरण छूटत नहीं दशमी रूप जो दशइन्द्रिय तासों पांचज्ञानेन्द्रिय पूर्व कहे पांचकर्मेन्द्रियनाम हस्त चरण गुदलिंग वचन यहदशोइन्द्रीकरि अपनोहित जियमोंजानि जौं संयम न करैनाम अपने वस न करै तौ सब साधन व्यर्थहोत हैं भगवान नहीं मिलते अर्थात् इन्द्रिन्ह के जीतें व्यतिरेक अपनो कल्याण नहीं होत एकादशीरूप जो एकमननाम दशोंइन्द्रिन्हको राजातासों वसकरि तब व्रतकौं सेवन करैजाय्यनाम संसारविषय तें विमुखह्वै तेहिव्रतके सन्मुखहोय तब एकादशीव्रतकोआगमन माघरूप फलपावै अर्थात् मनकोवसभयेबिना काहू साधनकरिजन्म मरण नहीं छूटत द्वादशीरूप दानदेवे पर ऐसोदान जेहतें तीनों लोक मों भय न रहे अभय ह्वै तब परहित मो तत्पर होनो सोई पारनकरै तौ फिर कोऊ शोक नहीं होत अर्थात् द्वादशीकेदिन दान देकरि पारन करनो चाहिये सो आत्मा जन्म मरण रहित एकरस आनन्दरूप है यह ज्ञानकरि अभयहोतहै सोई दानभयो आप निर्भय होकरि तब और जीवके हितकरबे मो तत्पर होय सोई पारनभयो यह रीति व्रतकियेते संसारशोक को नाशहोत है चयोदशीरूप औ।तीनो अवस्था नामजाग्रत स्वप्नसुषुप्तिमो त्याग करि भगवानकौं भजहुनाम सेवनकरु जोमन वचन कर्मतें अगो-चर नाम इन्द्रीको विषय नहीं अर्थात् तीनोंअवस्थामो अविद्याको आवरणहै तेहितेंपरे तुरीय परमेश्वर को स्वरूपहै सो व्याप्यनाम समस्तब्रह्माण्ड तासों व्यापक जो चैतन्यरूप सो दोऊअनन्त नाम परमेश्वर को रूप हैं यह जो निजाताहीं को तुरीय कहत हैं सो भगवत् रूप चतुर्दशीरूप जो चैादहभुवन नामभूर्भुवः स्वः महः जन तप सत्य यहसातलोक ऊपरको अरु तल तलातल महातल सुतल वितल रसातल पाताल यहलोकनीचेको तथा जड़चैतन्य जितनेजीव सो सब तासुरूपहैं अर्थात् समस्तविश्वकौं स्वामी रूप देखैं काहेकि भेदबुद्धिगयेबिन सीरामजू अत्यन्तअंगमाल नहीं हरणकरते अर्थात् अन्य साधनकरि जगतरूप क्लेश कमहोतहै परनिर्मूल नहीं जात यावत्भेद बुद्धि रहत है पूर्णमासी रूप सिद्धा प्रेमाभक्ति रस रूपा निःकामापूर्वोक्त सर्वसाधन सम्पन्नभये आविर्भावहोतहै ताकेरसकौं भगवान अरु हरिदास जानतहैं वाकेप्राप्तभये समताशीतल हृदय अभिमान रहित ज्ञानमो तत्पर विषयतें उदासीन जीवहोतहै यहां

पर्यन्त मुख्यसाधन जीवके कल्याण के हेतु सो कहे ताको पूर्वानुराग साधन भक्ति प्रथमकहि अरु सोई प्रेमा अनेक साधन संपन्न भये निःकामा अंस अविनाशिनी ह्वै करि सिद्धाभक्तिपूर्णमासीरूपसब साधन को फलरूपा उदय भई यहके आगे फेर कछु कर्तव्यता नहीं काहे कि सोई फलरूप है द्वितीयाते चतुर्दशीपर्यन्तवाली को सब साधनकहे सो सिद्धाभक्ति के प्राप्ति होवेको द्वार श्रीगुरु हैं सो पहिले तुक सों जनाये अरु ताके प्राप्त भये श्रीभगवान बस वर्ती होतहैं अधिकाया को फलको कहा कछु फागुनकी पूर्णिमा अरु परिवाकी संधि जो संवत लगैहै सो यहां सिद्धा भक्तिरूप पूर्णमा के प्राप्त भये अध्यात्म अधिभूत अधिदैवजो मूलनाम लोभ नाम सोई होलिय नाम संवत् ताको जलायकरि आगे फगुआ खेलनो अर्थात् आनन्दके उल्लासकरि फाग होत है तैसे सतचित् आनन्द स्वरूप परमेश्वर के आविर्भाव भये आपहूआनन्दरूपभयो तबसुख पूर्वक बिलास करे यह भाव है यहां संसारको नाशपरमेश्वरको आविर्भाव सोई संधि है रे, जीव जो परम सुख चाहे तौ पूर्व कह्यौ जो भोग ताको फागु अर्थात् समस्त वेद शास्त्रके विचारके इतने फल हैं यह चांचरि जो गीत भगवत् चरित रूप सो वेदपुराण अरु सज्जन सबको संमत रूप है अर्थात् जो तत्व याको निरूपण कियो सोई बेदादि को हृदय है तेहि के रहस्य को विचारिकरि संसारपार होतहै कबहूं यमकी धारिनाम परंपराको नहीं परत अर्थात् जन्ममरण निवृत्त होतहै सर्व संशय सेको नाशक दुखकेदूर करनेवाले सुखकेदाय एकहरि हैं सोसाधु कृपाबिना नहीं मिलतेअन्यकोटिन्ह उपायतें अरुसंसार समुद्रको नावरूप शुद्ध संतन्ह को नाम ज्ञान बैराग्य क्षमा करुणादि तेहि तें युक्त जो सन्त ताको चरणहै तेहिके शरणकरि परिश्रम रहित दुखके हरणिहारे रामजू मिलतहैं यह तुलसी को सिद्धान्त है या पद मे पहिलें गुरुपद निरूपण किये मध्यमें श्रीभगवानको स्वरूप कहे तेहिकेप्राप्तको मुख्य उपाय भक्ति महारानी को स्वरूप निरूपण किये ताकेअनन्तर ज्ञान बैराग्यादि सर्वमुख्य साधनकहे साधु पदनहीं कहे रहे सो अन्त मे आनिकह्यौ ताकों यह अभिप्राय है कि गुरुपद अरु पद कहने कों दोय हैं पर बिचारते एकै निश्चयहोतहै काहे कि साधुता व्यतिरेक गुरुवाई नहीं संभवै नारदादिक जोसन्तसोई जगत गुरु भयेहैं पर शास्त्रमे दोऊपद भिन्न२ करि कह्यौ है तेहतें गोसाईं भी आदिमे

गुरु अत्मसो सन्तचरण शरण किये अर्थात् कृतार्थ होवे निमित्तगुरु के शरण कीनो तेहिकी कृपातें भगवान को पाय कृतार्थ होकर शुद्ध नामजीवन मुक्ति जो सन्तगुरु हरिरूप ताके चरण कौं भक्ति संपन्न ह्वै सेवना यह सिद्धान्त रहस्य है ॥ २०३ ॥

मू० । जोंमनलागैरामचरणअस । देहगेहसुतवित कलत्र महंमगन
होतबिनयतनकियेजस । द्वंदरहित गतमान ज्ञानरत विषय
बिरतखटाइ नानाकस । सुख निधानसुजान कोशलपति ह्वै प्रसन्न
कहुक्यों न होहिंबस । सर्वभूतहितनिर्व्यलीकचित भक्ति प्रेम
दृढ़ नेम एक रस । तुलसिदास यह होय तबहिं जब द्रवै ईश
जेहिंहत्यौ शीसदश ॥ २०४ ॥

टी० । यहपदमो प्रथम साधन पक्ष द्वितीय सिद्धपक्ष दोऊ अर्थ लिखेंगे जो मन राम चरणमो असलागे जैसे देहगेह पुत्र धन कलत्र नाम स्त्रीमो बिनु यत्न किये मगन होत नाम डूब्यौ है अर्थात् देहादि मो स्वाभाविक प्रीति करि लग्यौ है तैसे श्रीरामचरणमो लगै यह जिज्ञासु को उपदेश किये अर्थसिद्ध पक्षजाको मन श्रीराम चरणमो लगिचुक्यो ताको सोई चरण देहरूप है नाम सामान्यजीव जो कछु व्यापार करत है सो अपने देहके सुख निमित्त जैसे जीवन मुक्तका जो कछू कर्तव्यता सोभगवत चरणमों समर्पण होत है अहंकर्ता अहंभोक्तायह बुद्धि नहीं होतिगेह नाम विषयजीव अनेक प्रयासकरि गृहमो लवआवै है तब विश्राम पावे है जैसे जीवनमुक्तको चरणरूप गृहविश्राम स्थान है सुतनाम संसारीजीवका पुत्रविषै अपनेशरीरतें अधिक प्रीति होति है तद्वत् जीवनमुक्तकों स्वाभाविकप्रेम चरणरूप पुत्रमो है वित्तनाम सामान्य जीवका धनकरि नानाभोग अरु आपतकाल मो सोई धन सहायक होत है तैसे जीवनमुक्तका समस्तभोग अरु सर्वकाल सहायक चरण रूपधन है कलत्रनाम विषयीजीव स्त्री मो रमणकरत हैं तद्वत् जीवनमुक्त को चरणरूप स्त्रीमो रमणकरि सुख है अन्यत्र नहीं मह नाम चरणरूप देहादिमो एकरस टिक्यौ है तेहि निष्ठाकरि मगन होतनाम आनन्द रूप होत है तथा बिनु यत्न किये यश नाम यद्यपि जीवन मुक्तका अपने यशकी कामना नहीं तथापि बिनायत्न समस्त जगत यशगावतहै द्वंदनाम शीत उष्ण दुख सुख तेहितें रहित नाम महिके उद्वेगकरि व्याकुलता त्याग करु गतमान नाम अभिमानको छोड़ ज्ञानरत नाम ज्ञानमो प्रीति करु विषय बिरत नाम विषय तें

वैराग्य जैसे खटाई नाम अतिखट्टा नानारस नाम अनेक कसाववस्तु तेहिविषें जैसे स्वभावतें अरुचि होत है तद्वत् विषय को त्याग करु अरु सुखके निधान सुजान जो श्रीरामजू ताको प्रसन्न ह्वै करि क्यों नहीं करै जो स्वामी नाम अवलम्बी के वस होत हैं अर्थात् राम नाम कहतरहु यह जिज्ञासु प्रति उपदेश है अथसिद्ध पक्षद्वन्द जो सुख दुःखादि संसार को धर्मसो रहित नाम भगवत् अनुरागी को आप छोड़ि देत है तथा अभिमानहुं त्याग करत हैं अरु जैसे नाना खट्टे अरु कसाव वस्तु तें मनुष्य को अरुचि होत है तैसे विषय को राम भक्तितें वैराग्य होत है अर्थात् सिद्धावस्था मो यह त्याग करनो यह ग्रहण करनो यह बुद्धि को अभाव है पर जैसे शीत अग्नि को नहीं स्पर्श करत तैसे जीवनमुक्त को स्वाभाविक निषेध सब आप दूरहोत है अरु आनरत नाम ज्ञानादि जो महानसाधन सो विचारै हैं कि ऐसे महात्मा को छोड़ि दूसरे के निकट कहां जांय अन्यत्र रहनो हमारी शोभा नहीं यह बुद्धि तत्पर ह्वै रामानुरागीको सेवनकरत हैं तो कहु तेरे मन सुख के पात्र सुजान नाम अन्तर्य्यामी जो श्री रामजू सोपूर्वोक्त स्वरूप अपने भक्तको देखि प्रसन्नह्वै क्यों न बनहै।कि अर्थात् ऐसेभक्तके स्वामी दासवत् आधीन होतहैं तेजीव सर्वभूतसो हित बुद्धिवत् निर्व्यलीकनाम मिथ्यारहित चित्त अरु दृढ़ह्वै एक रस नेमकरि प्रेमाभक्ति को ग्रहणकरु पर तुलसीदास कहत हैं कि यह पूर्वोक्त साधन सम्पन्न जीव तब होय जब ईश जो मारयौ शीश दश नाम रावण को सो द्रवै नाम कृपाकरै अर्थात् ईश्वर अनुग्रह विना कल्याण मार्ग मो जीव की प्रवृत्ति नहीं होति इति मुमुक्षुप्रति अथ सिद्ध पक्ष पूर्व्वकह्योजो जीवनमुक्त रामानुरागीको स्वरूप ताको सर्वभूत हित होत हैं अर्थात् परमेश्वरतें भिन्न काहू कालमें कोऊ भूत को देखत नहीं ताको वैरकरै नाम देवण को प्रेतके शरीर तें परमेश्वर निकासकरि दर्शनदिये यह कथा भक्तमालमो प्रसिद्ध है अरु निर्व्यलीक चितनाम तेह महात्मा के चित्तको मिथ्या आपै छोड़िभागो तथा सिद्धाप्रेमाभक्ति नेमकरि एकरस दृढ़ह्वै तेहराम भक्तके हृदयमो टिकातिभई अर्थात् ऐसे महानको छोड़िभक्ति महारानी कहां जाय सो तुलसीदास कहतहैं यह जीवनमुक्तकी दशा तब होय जब ईश्वर कृपाकरें अर्थात् यह अवस्था ईश्वरके अनुग्रहको फलहै तहां कहतहैं कि प्रथम जब जीव कछु कर्त्तव्यताकरै तब ईश्वर कृपा करत हैं तेहि

कर्तव्यताको देखावत हैं कि जेहि हत्यो शीशदश नाम पूर्व साधना- वस्थामे जेहिजीव ने दश जो इन्द्री अरु ताको शीशनाम मस्तकरूप जो मन तेहि सबको जो विषय सम्बन्धी वृत्ति ताको हत्योनाम नाश कियो अर्थात् इन्द्री अरु मनको संसारके विषयतें फेरि परमेश्वर के सन्मुखकरै तब स्वामीको पूर्ण अनुग्रह होत है तेहि अनुग्रह को फल पूर्वोक्त जीवनमुक्त की दशा अरु निष्ठा भक्तको सेवन करति है यह अर्थ है ॥ २०४ ॥

मू०। जौनभजै चहैहरिसुरतरु। तौतजि विषय विकार सारभज अजहूंजोमैंकहौंसोईकरु। समसन्तोषविचारबिमलअतिसत संगतिएचारिदृढ़करिधरु। कामक्रोधअरुलोभमोहमदरागद्वेष निशेषकरिपरिहरु। श्रवणकथामुखनामहृदयहरिशिरप्रणाम सेवाकरअनुसरु। नैननिरखिकृपासमुद्रहरिअगजगरूपभूप सीतावरु। यहै भक्ति वैराग्य ज्ञानयहहरितोषनयहशुभ व्रत आचरु। तुलसिदासशिवमतमारगयहचलतसदासपनेहुनाहिं न डरु ॥ २०५ ॥

टी०। मनको उपदेश करतहैं जो हरिरूप कल्पवृक्ष को चहै तो ताको भजै विषय विकार त्यागकरि साररूप हरिको भजु जो काल विमुखह्वै करि गयो सो व्यर्थभयो अबहूं ते जोमैं कहतहूं सोई करु अब भजनकी कर्तव्यता देखावत हैं समता अरु संतोष अति निर्मल विचार तथा सतसंगति यही चारों जीवके कल्याण के मुख्य उपाय हैं सो दृढ़करि धारणकरु अरु कामादि जो निषेध ताको निशेषनाम करतें परित्याग करु सर्व इन्द्रिन्ह को उचित कर्त्तव्यता देखावत हैं अगजगनाम जड़चैतन्य रूप जितनी कर्त्तव्यता अरु अकर्त्तव्य पूर्व कह्यो तितनोई सर्व साधन अरु सर्व महात्मन्ह को सिद्धान्त है वाही को तुलसीदास शिवकहैं कल्याणरूप निर्भयराह मानत हैं ॥ २०५ ॥

मू०। नाहिनऔरकोउशरणलायकदूजोश्रीरघुपतिसमविपतिनिवा- रण। काको सहजसुभावसेवकवसकाहिप्रणतपरप्रीतिअकारण। जनगुणअल्पगणतसुमेरु करिअवगुणकोटिबिलोकिबिसारण। परमकृपालभक्तचिन्तामणिबिरदपुनीतपतितजनतारण। सुमि- रत सुलभदासदुखसुनिहरिचलत तुरतपटपीतसंभारन। साखि पुराणनिगमआगमसब जानत द्रुपदसुता अरुवारण। जाको यशगावत कबिकोबिद जिन्हकै लोभमोह मदमारण। तुलसि-

दासतजिआसमकलभजुकोशलपतिसुनिबधूउधारण २०६ ॥

टी० । श्रीरामजूके गुणअरु स्वभावको परत्व कहतहैं भक्तन्हके ऊपर विशेष ममता स्वामीको देखावतहैं गजेन्द्रद्रौपदी के प्रसंग करि भक्त वात्सल्य दृढ़ किये याके यश को सब महात्मा लोभादि रहित निष्काम हृदय जाकोसो गावतहैं ताकोरे तुलसीदास भजु यह उपदेश है ॥ २०६ ॥

मू० । भजिबे लायक सुखदायक रघुनायक सरिस शरणप्रद दूजो नाहिन । आनंद भवनदुखदमन शोक शमनरमा रमणगुण गणतसिराहिंन । आरत अधम कुजाति कुटिलखलपतित सभीतकहूं जेसमाहिंन । सुमिरतनामबिबसहुंबारकपावत सोपद जहांसुरजाहिंन । जाकेपद कमल लुब्धमुनि मधुकर बिरतिजेपरमसुगतिहु लुभाहिंन । तुलसिदास शठतेहि न भजसिकस कारुणीकजोअनाथहिंदाहिंन ॥ २०७ ॥

टी० । जेहरघुबरको गुणगिनतें समाप्त नहींहोत अति अधम जीवजाकोंकहूं शरणनहीं ताहूको दुर्लभगतिके दाताजेहकेचरण कमलविषें मुनिसब भ्रमरह्वै लुब्धभये रहतहैं विरति नाम विषय सोंप्रीति नहीं अर्थात् वैराग्यको अवधि जो परम सुगतिहू नाम मोक्षऊपदकों लोभनहीं करते तुलसीदास कहत हैं कि करुणाके मूर्तिअनाथ जीवन्हके ऊपर सन्मुखतेह रघुबरकों काहे न भजसि रेशठ जीव भजनतें बिमुख है तेहितें शठकाहे ॥ २०७ ॥

मू० । नाथसोंकौनविनतीकहि सुनावौं । चिविधअनगणितअव- लोकिअघआपनेशरणसन्मुखहोतसकुचिसिरनावौं। विरचि हरिभक्तको वेषवरटाटिकाकपटदल हरितपल्लवनिछावौं । नामलगिलाइलासाललितवचनकहिव्याधज्यौं विषयविह- गनिवझावौं । कुटिलशतकोटिमेरे रोमपरवारि यहिसाधु गनतीमोपरिलहिंगनावौं । परमबर्बरखर्बगर्बपर्वतचढ्यौअज्ञ- सर्वज्ञजनमनिजनावौं।सांचकिधौंझूठमोकोंकहतकोउकोउ रामरावरोहोंतुमरोइ जनकहावौं । बिरदकीलाजकरि दासतुलसीहि देवलेहुअपनाइअबदेहुजनिबावौं ॥ २०८ ॥

टी० । हेस्वामी अपने पापकों देखि शरणके सन्मुख होत तब विनय करत संकोचतें माथ ऊपर नहींहोत अपने द्वार पाखण्डी जीवन्हकी कर्तव्यता जनावतहैं हरिभक्तन्ह के वेषमाला तिलक

सुद्रादिकों विशेषलेंविरचिकरि बरटाटिकानाम ब्याधापक्षिन्हके बझाइबेकों बांसकीटाटी हरे पत्तन्हतेंछावतहै इहांसोईवेषटाटा किये कपटनाम ऊपर वैराग्यको चिन्ह अन्तष्करणमो विषयभोग की कामना सोईहरे पत्ता तुल्य तेहतें वेषरूप टाटीकों छावतहैं अर्थात् कपटके आवरणमो वेषहै अरुब्याधाकों बझाइबेकी लग्गी होति है सोनाम जो हरेनारायण गोविन्दादि जगत्के सुनायवे को कहतहैं सोई लग्गी रूप अब लासा वहिये सो ललित वचन लासारूप लगाय ब्याधकीनाईं विषयरूप पक्षिन्हको बझावतहौं अर्थात् ब्याधा आप दूर रहत है जुहा को पक्षी लगते बझावत है तैसे इतनो उखखर नामकों कहना जासो दूरके मनुष्य भक्त की प्रतीति करि निकट आवें तेहनाम उच्चारण मो मिल्यौजो मीठी २ बाणी सोई लासा तुल्य तेह करि प्रसन्न ह्वै दियौ जो मनुष्यन्हने पूजासोई विषयरूप पक्षिन्हको बझावनोभयौ यहसमता है पूर्वकह्यौ जो कपटको आवरणतैसे संतकोटि कुटिलमेरे रोम २ परवारि यहि नाम निछावरि होत हैं ऐसो अधम जो मैं सो साधुन्ह के गिनतीमो पहिले गिनावतहौं तथा परम बर्बर नाम अत्यन्त ब्यर्थ बोलने वालो खर्वनाम तुच्छ गर्बरूप पर्वत के ऊपर चढ्यौ अति अज्ञान ऐसो जोमैं सो सर्वज्ञ जनन के मध्यमो मणि रूप अपने जनावतहौं यद्यपि मेरे ऐसो अधम दूसरो नहीं तद्यपि सांच अथवा झूठमोको हे रघुबर कोऊ२ जीव तुम्हारो कहतहैं तथा मैंहूं दास कहावत हूं तो अब अपने बाना की लाजकरि हे देव तुलसीदास को अपनो करो अब बावों नाम पीठि मति देव यह विनय है ॥ २०८ ॥

मू०। नाहिंनेनाथअवलम्बमोहिंआनकी। कर्ममनवचनसत्यकरु-
णानिधिएकगतिराम भवदीय पदत्राणकी। कोहमदमोह
ममतायतनजानिमनबातनहिंजात कहिज्ञाक विज्ञानकी।
कामसङ्कल्प उरनिरखिबहुबासनहिंआसनहिं एकहूआंक
निर्वाणकी। वेदबोधितकर्मधर्मबिन अगमअति यदपिजियें
लालसाअमरपुरजानकी। सिद्धसुरमनुजदनुजादि सेवत
कठिनद्रवहिंहठयोगदियेभोगबलिप्राणकी। भक्तिदुर्लभपरम
शंभुशुकमुनिमधुपप्यासपदकंजमकरन्दमधुपानकी। पतित
पावनसुनत नाम बिश्राम कृतभ्रमतपुन समुझिचितग्रंथि

अभिमानकी।नरकअधिकारममघोरसंसारतमकूपकहिभूप भयशक्तिआपानकी । दासतुलसीसोउ त्रासनहिंगनतमन सुमिरिगुहगीधगजज्ञातिहनुमानकी ॥ २०९ ॥

टी० । मोकों और अवलम्बनहीं भवदीयनाम आपके पदत्राण नामजूतोंकी शरणहै कामादिके परवसताकरिज्ञानविज्ञान को आशनहीं कामनाके सङ्कल्पतें बहुतवासना हृदयमो देखियेकहूं आंकनाम सब अंशमो एको अंशतें मोक्षकी आश नहीं वेद को बुझायो जो यज्ञादि कर्मरूप धर्मतहि बिनु देवलोक की प्राप्ति अतिकठिन है यद्यपि नियमो कालमा वाके प्राप्तकी अधिक है तथापि साधनबिना दुर्घटहै अरु सिद्धादि जो अन्य स्वामी ताकौं सेवन अतिकठिन काहेकि हठयोगकरि अपने प्राणको बलिरूप भोग जब तिन्हैं देवै तब कहीं कृपाकरैं पूर्वोक्त जितने कल्याण के हेतुकहे तेहिके योग्य तो मैं हौं नाहीं तथा आपकी भक्ति अति उत्तम है सोऊहम ऐसे जीवन्हको परमदुर्लभ काहेकि शिवजू अरु शुकदेवादि जो मुनि साक्षात् ईश्वररूप सोऊ आपकेचरण कमलके मकरन्द नाम रसरूप मधुके पान करबे को भ्रमररूप ह्वै प्यासेबनेहैं तहांहम ऐसेकीकौनगिनती तथा आपकोनामत्रिधाम कर्ता अरु पतितपावन सुनत हैं सो समुझिकरि भी पुनि नाम फेरि चितभ्रमतहै काहेकि अभिमानरूपगांठिपडिरह्यौहै अर्थात् शरीराभिमानकरि नाममों निष्ठानहीं भांति अनेकवासनाकरि चितभ्रमत है कोउ साधनको अधिकार अपने मो नहीं तो नर्क रूप जो भयानकसंसार अंधेरो कूपतुल्यतामो पडिबेको अधिकार मेरोहै हेराजन् सोमैंने अपनोशक्ति अपनेहीमुख कहिदई तथापि तुलसीदास सो जो नर्कादि को त्रास ताकौ मनमें नहीं गिनत स्मरणकरि निषाद गृद्ध गजेन्द्र अरु वानरजातिकी सुगति अर्थात् पापरूप अधम योनि जीवन्ह कौ आप जौने स्वभाव अरु बानाते कृतार्थकिये सो आपमो विद्यमानहै तब कौन चिन्ता ॥ २०९ ॥

मू० । औरकहंठौरंरघुवंशमणिमेरे।पतितपावनप्रणतपालअशरण शरणबांकुरेबिरदविरुदैतकेहिकेरे।समुझिजियदोषअतिरोष करिरामजेहिकरतनहिंकानबिनमदनफेरे । तदपिह्वै निडरहौंकहौंकरुणासिंधु क्योंअरहिजातसुनिबातबिनहेरे। सुखसदुचिहेतुबसिकोपुररावरेरामतेहिकचिहिकामादिगन

घेरे । अगमअपवर्गअरुस्वर्गसुकृतैकफलनामबलक्यौं बसौंयम नगरनेरे । कबहुंनहिंठाउं कहंजाउं कौशलनाथ दीनबित हीनहौंबिकलबिनुडेरे । दासतुलसिहि बासुदेहु अबकरि कृपाबसतजगगृद्धव्याधादिजेहिंखेरे ॥ २१० ॥

टी० । दूसरोठौर मोको नहीं तामो हेतु कहतहैं बांकुरेनाम बांकी बिरद बिरुदैत नाम पतितपावनादि बिरदावली कोबाना दूसरो केहको है अर्थात् काहू को नहीं यह मैं समुझतहौं कि अन्तर्य्यामी जो आपसो मेरेदोषको अपनेजियमो समुझिजेहनाम जेहतें अतिरोषकरि हे रामजू मेरी बिनतीको करत नहीं कान नाम सुनतेनहीं बदन फेरेनाम मुहफेरिलेतहै। तद्यपि निडरहो कर बार२ कहतहौं हे करुणासिन्धु क्यों बरहिजात नाम काढे बगायेजातहो मेरेबिनयरूप बातको सुनिकरि बिनहेरे नाममेरे ओर कृपाकटाक्षतें देखेबिना अर्थात् यद्यपिमैं दोषरूपहौं तथापि आपअत्यन्तकृपालहो अबकृपाकरो अबअपनो मतलबकहतहैं कि मुख्यरुचि हेतुनाम रुचिकरि प्रीतितौ बैकुण्ठमो निवासकीहैतेह रुचिको कामादिने घेरलियौ तौ कामीजीवको बैकुण्ठकी आशा निःफलहै अरु अपबर्ग जो मोक्ष सो हमऐसेको अतिकठिन तथा स्वर्ग सुकृतैक नाम मुख्य पुण्यको फलहै सो पुण्य हममो है नहीं तो चेतकहो कि बैकुण्ठ स्वर्गमोक्ष तीनों को अधिकार नहींतो नर्क जायबेमो हेरघुबर कबहुं २ तुम्हारो नाम लेतहौं तौ ताके बलते यमलोकके नेरेनाम निकट जोनर्क तामो कैसे बसों अर्थात् नाम के प्रभावते यमराज मोको नर्कऊ मो नहीं रखि सकते हैं मोको कहुं नहीं ठौर है नहीं तो आपैकहो हे कोशल नाथ मैं कहांजाउं कैसो मैं अतिदीन अरुधर्मरूप धनकरि हीनतथा नर्कऊ मो डेरा न पाये तेहतें रहबे को कहुं जगह नहीं यहते अति व्याकुल अबतुलसी दासको कृपाकरि गृद्धव्याधादि जौनेखेरे नाम गांवमो बसतहैं तहां बसबेको स्थानदेव यह बिनय है ॥ २१० ॥

मू० । कबहुंरघुबंशमणिसोकृपाकरहुगे । जेहिकृपाव्याधगजबिप्र खलनरतरेतिन्हहिंसममानिमोहिंनाथउद्धरहुगे । योनिबहु जन्मिकियकर्मखल त्रिबिधिबिधिआचरणकछुहृदयनहिंधर हुगे । दीनहितअजितसर्बज्ञसमरथप्रणतपालचितमृदुलनिज गुणनिअनुसरहुगे । मोहमदमानकामादिखलमण्डलीसकुल

निर्मूलकरि दुसह दुख हरहुगे। योगजपयज्ञविज्ञानतें अधिक अति अमलदृढ़ भक्तिदै परमसुखभरहुगे। मन्दजनमौलिमणि सकल साधनहीन कुटिलमनमलिनजिय जानिजौ डरहुगे। दासतुलसी वेदविदितविरदावलीविमल यशनाथकेहिभांति विस्तरहुगे॥ २११॥

टी०। हे रघुवंशमणि कबहूं आपसो कृपाकरहुगे जैसे नेकपाते व्याधादि संसार पारभये तिन्हसम मोको मानि उद्धारकरहुगे मेरे पापरूप कर्तव्यताको भुलायकरि अपने पतितपावनादि गुण को अनुसरहुगे नाम ग्रहण करोगे मोहादि सकलनाम समूह निर्मूलकरि मेरे दुसहदुखको दूरकरोगे सबसाधनते अधिक जो भक्ति सो दैकरि परमसुखते पूर्णकरोगे यहां पर्य्यन्त भविष्य प्रार्थना है कि ऐसो आप कब करोगे चेत मन्दजनन्ह को मौलिमणि नाम मुकुट तुल्यजो मैं सकल साधनहीन कुटिल मनमलीन जीव ऐसो मोको जानि जो डरहुगे नाम यह बड़ो पापीहै मेरे ग्रहण करबे योग्यनहीं ऐसो चित्तमें करोगे तो वेदविदित बिरदावली पतित पावनादि अब अति निर्मलयश हे रघुबर केहि भांति विस्तार करोगे अर्थात् जो पापिन्हते भयमानेगेतो अधमोद्धारणादि यश वेदलोकमें कैसे विदित होयगो यह तुलसीदास पूछतहैं २११॥

मू०। रघुपतिविपतिदवन। परमकृपालप्रणत प्रतिपालकपतित पावन। क्रूरकुटिलकुलहीनदीनअतिमलिनयवन। सुमिरत रामनाममपठयेसबअपने भवन। गजपिङ्गला अजामिलसेखल गणेधौं कवन। तुलसिदास प्रभुकेहि न दीन्हगति जानकी रवन॥ २१२॥

टी०। रे जीव सेवाकरबे योग्य श्रीरामजूहैं दूसरोनहीं ताको गुणऐश्वर्यकहतहैं जो स्वामीनाम सम्बन्धते अतिमन्दजीवजो यवन ताको अपनो धामदिये तेहि यवन को प्रसङ्ग पीछे लिखआये हैं अजामिलादि जितने खलन्ह को कृतार्थ किये सो तुलसीदास कितने गिनावे अर्थात् असंख्य हैं॥ २१२॥

मू०। हरिसमआपदाहरणनहिंकोउ। सहजकृपालुदुसहदुख सागरतरण। गजनिजबल अवलोकिकमलगहिगयोशरण। दीनवचनसुनिचलेगरुड़तजि सुनाभधरण। द्रुपदसुताकहं चण्याद्युशासननगनकरण। हाहरिपाहिकहतपरेपटबिविध

बरण। इहैजानिसुरनरमुनिकोविदसेवतचरण। तुलसीदास प्रभुकोनअभयकियौन्हगउद्धरण॥ २१३॥

टी०। श्रीरघुबर समान दूसरो दीनबंधुनहीं दीनन्हसो गजेन्द्र अरु द्रौपदीको प्रसंग जनावतहैं ह्यापद खेदसो है पूर्व कह्यो जो गुण सब वाही को जानि सब देवादि सेवनकरत हैं तुलसीदास कहत हैं कि शरणागत के उद्धारकर्ता जो प्रभु सो केहको नहीं अभय किये अर्थात् जो जो जीव शरण भये ताको संसार भय छोड़ाये॥ २१३॥

मू०। ऐसीकौनप्रभुकीरीति। बिरदहेतुपुनीत परिहरिपांवरनिपर प्रीति। गईमारणपूतनाकुचकालकूटलगाइ। मातुकीगति दईताहि कृपालुयादवराइ। कामनाहितगोपिकनिपरकृपा अतुलितकीन। जगतपिताबिरंचिजिन्हकेचरणकीरजलीन। नेमतेंशिशुपालदिनप्रति देतगणिगणिगारि। कियौलीन सो आपुमेंहरिराज सभामझारि। व्याधचितदै चरण मारयौ मूढ़मतिमृगजानि। सोसदेह स्वलोकपठयो प्रकटकरिनिज बानि। कौनतिन्हकीकहैजिन्हके सुकृतअरु अघदोउ। प्रगट पातकरूपतुलसीशरणराख्योसोउ॥ २१४॥

टी०। बिचार करतो रघुबीर बिन दूसरे कौन प्रभु की ऐसी रीति है कि अपने बानाके निमित्त पुनीत जो ऋषि सभा ताको छोड़ि पांवर जो शवरी स्वपचादि तेहितें प्रीति करनो पूतना के प्रसंगकरि यह जनावतहैं कि परमेश्वर संबन्धतें निषेधऊ बिधि को फल देतहैं तो बिधि तें जो उत्तमफल होय तो यामो कहा कहनो अब यह कालको उपासक भगवत् स्वरूपमो भेदकरतहैं सो गोसाईं व्यासादि सन्त के ज्ञाता बेदशास्त्र के सिद्धान्त को बिचारि अभेद उपासना देखावतहैं बिशेषतें श्रीरामकृष्णस्वामी मो भेद करनो यह कलिकाल को कौतुक है यार बुद्धिकरि जो गोपिन्हने सेवनकियौ तेहि गोपिन्हके चरणरजको ब्रह्मा माथेपर लिये यह भगवत् शरणकी महिमाहै गारीदैकरि शिशुपालराज सभा बिषें भगवतगति पायौ प्रीतिपूर्वक रामकृष्ण गोबिंदकहि करि भगवतपद प्राप्तहोय यामोकौन आश्चर्यहै व्याधामृग बुद्धि करि चरणमो तीरमारयौ सो याही देहतें स्वर्गगयौ तेहिचरण कमलको पूजनकरि भगवत् धाम प्राप्त होयतो कौन संदेहप्रकट

करि निजवानि नाम पतित पावनादि प्रगट पातकरूप जो जीव व्याधादि सो उनकरणमे राखतभये तौ तुलसी कहत हैं कि जेह जीवन्हको पापपुण्य देखकहै ताकीमहिमा शरणागयेको कहै ॥ २१४ ॥

मू० । श्रीरघुवीरकी यहवानि । नीचहूं सों करतनेह सुप्रीतिमन अनुमानि । परम अधम निषाद पांवरकौन ताकीकानि । लियोसोउर लाइसुत ज्यौं प्रेमको पहिचानि । गीधकौन दयालजो विधिरच्योहिंसासानि । जनकज्यौंरघुनाथताकहं दियोजलनिजपानि । प्रकृतिमलिनकुजातिशवरीसकलअवगुणखानि । खातताके दियेफल अतिरुचिवखानिवखानि । रजनिचरअरुरिपु विभीषणशरण आयोजानि । भरतज्यौं उठिताहिभेटत देहदशाभुलानि । कौनसौम्यसुशीलवानर जिन्हहिंसुमिरतहानि । कियेतेसवसखापूजेभवनअपनेआनि । रामसहजकृपालु कोमलदीनहित दिनदानि । भजहिं ऐसे प्रभुहितुलसीकुटिल कपटनठानि ॥ २१५ ॥

टी० । केवलप्रीतिवस होनो यह बानिहै प्रीतिके परवसतासो निषाद गृद्धशवरी विभीषणवानर भालुको प्रसंग श्रीमद्रामायणमें कह्योहै सोई प्रमाणहै सौम्यनाम सुन्दर स्वभाव करि कृपालु अरु कोमल तथा दीनके हितअरु दिनप्रतिदान केदाता ऐसे प्रभुको भजन करनो चाहिये पर कुटिलता जो ढिठाई अरुकपटको व्यापार नठानि नाम त्यागकरि यह तुलसी कहतहैं दूरां भजन सो अपने कल्याणको विश्वास नहीं सोई कुटिलता अरु बाहर तें वैराग्यदेखावनो भीतरतें विषयवासना यही कपटहै ॥ २१५ ॥

मू० । हरितजिऔरभजियेकाहि । नाहिनकोउरामसोममताप्रणतपरजाहि । हिरणकशिपुबिरंचिको जनकर्ममनअरुबात । सुतहिंदुखवतविधिनरज्यौंकालकेघरजात । शंभुसेवकजान जगवहुवारदियदशशीश । करतरामविरोधसोसपनेहुं न हटक्योईश । औरदेवनकीकहाकहौंस्वारथहिकेमीत । कवहुकाहुनराखिलियो कोउ शरणगये सभीत । कोन सेवनदेत संपत्तिलोकहू यहरीति । दासतुलसी दीनपरएकराम्हीकोप्रीति ॥ २१६ ॥

टी० । प्रणत जीवन के ऊपर भगवान सदृश दूसरे देवतन्ह की ममता नहीं यह हेतु तें हरिको भजनो चाहिये औरकी ममता

नहीं यह कहे तेहिको देखावतहैं हिरण्यकशिपु कर्म मन बचन तें ब्रह्माजू को भक्तरह्यो परपुत्रको दुखदेते ब्रह्माजूने वाको मनान कियो अरुजानते रहे कि यह कर्तव्यतातें कालकेघर यहजात है तथा शिवजू को सेवक रावणरह्यो यह जगत जानतहै कि बहुत बार अपने मस्तकको काटिकाटि पूजन कियेपररामजूतें बिरोध करते खमजमो वाको शिवजू डाट्यो नहीं कि ऐसो कासमति कर अर्थात् जानतरहे कि कुलसहित संहारहोतहै तौजो ममता होती तो निवारण करिदेते मुख्यब्रह्माजू अरु शिवजू ईश्वर तेहि की जब यह रीतिहै तो और देवन्ह की कहाकहूं सब स्वारथके मीतहैं काहू कालमो कोऊने सभीत जीव कौं शरणमो नराख्यौ चेत कहे कि आराधन कियेतें देवता सब ऐश्वर्य देतहैं सो सत्य है परसेवन कियेतें सम्पति को नहीं देत है यह तो यालोक मो मनुष्य राजनकी रीतिहै कि जापर रीझे ताकों निहाल करिदेत हैं यह हेतुन्ह तें तुलसीदास को सिद्धान्त है कि दीन जीवन्हको ऊपर एक रघुबरकी प्रीतिहै और की नहीं ॥ १२६ ॥

मू० । जोपैदूसरोकोउहोइ । तौहौंबारहिंबारप्रभुकतदुखसुनावौंरोइ । काहिममतादीनपरकाको पतितपावननाम । पापमूलअजामिलहि केहिंदियो अपनोधाम । रहेशंभु बिरंचि सुरपतिलोकपालअनेक । सोकसरि बूड़तकरीशहि दईकाऊनटेक । बिपुलभूपति सदसिमहंनरनारि कह्यप्रभुपाहि । सकल समरथरहे काऊनबसन दीन्हौंताहि । एकमुख क्यौं कहौंकरुणासिंधुकेगुणगाथ । भक्तहितधरिदेहकाहानकियौ कोशलनाथ । आपुसेकहिसौंपियेमोहिंजौंपैअतिहिंघिनात । दासतुलसीऔरबिधिक्यौंचरणपरिहरिजात ॥ २१७ ॥

टी० । स्वामीको यश कहिकरि अबबिनयकरतहैं कि आपसदृश दूसरोनहीं तेहितेबारबार रोयकरि अपनो दुख आपतें कहतहौं अजामिल केहकेनामतें गतिपाये ब्रह्मादि सब विद्यमान रहे पर करीशहिनाम गजेन्द्रकौटेक नाम अवलम्ब काहूने न दियौ आपै दिये सदसिनाममंदी नरनारि जो द्रौपदीसो हे प्रभुपाहि यहकहत भई ताको आपै बस्त्रतें पूर्ण करिदिये यह हेतुन्ह करिबूझि पड़त है कि दीनबन्धु पतित पावन अशरण शरण आपै है दूसरो नहीं आपको गुणशेषादि नहीं कहिसकत एकमुखतें मैं काहकहूं पर

इतनो कहत हौं कि भक्तन्हके अर्थ देहधरि आप कौनकार्य न किये अर्थात् नीच ऊंच सब व्यापार करि दासन्हकों सुख देतहौ मेरीदृष्टि सोदूसरो कोऊ हैनहीं जो हमऐसे को शरणदे पर जौ हमतें अति घिनातहौ नाम यह पापरूप नीचजीव है हमारे शरणके योग्यनहीं तौ आपके जानबेमो जौ कोऊ दूसरो आप सदृश दयाल होय तहां मोकों संपूर्ण करदेव यह विना और प्रकारतें तुलसीदास तुम्हारो चरण कमल छोड़ि कैसे जाय॥ २१७॥

मू०। कबहिंदेखाइहौहरिचरण। शमनसकलकलेशकलिमलसकल मंगलकरण। शरदभवसुन्दरतरुणतरअरुणवारिजवरण। लच्छिलालितललितकरतलछविअनूपमधरण। गंगजनकअनंग अरिप्रियकपटवटुबलिछरण। विप्रतियनृगबधिकके दुख दोष दारुण दरण। सिद्धसुरमुनिवृन्दवन्दितसुखदसबकहंशरण। सुकृत उर आनतजिन्हहिंजनहोततारणतरण।कृपासिंधुसुजानरघुवरप्रण-तआरतिहरण।दरशआशपियासतुलसीदासचाहतमरण २१८॥

टी०। उत्कंठा करि विनय करत हैं कैसो है चरण शरद ऋतु सो उत्पन्न सुन्दर नवीन अतिलाल जो कमल तैसो वरणनाम रंग लच्छि नाम लक्ष्मीजूके करतलते लालितनाम दुलारयो अर्थात् निरन्तर अपने हस्त कमलते महारानी सेवा करति हैं तथा उपमा रहित छविको धारण किये जो चरण फेर कैसो है जगपावनि जो श्रीगंगाजू ताको जनक नाम पिता अर्थात् उत्पत्तिस्थान अरु अनंग अरि जो शिव जू ताको अतिप्रिय नाम निरन्तर हृदयमो राखत हैं कपट करि वामन रूप जो हरि सो जाही चरण करि बलिको छल्यो है तथा अहिल्या अरु गिरगिट को रूप जो राजानृग तथा व्याधा के कठिन दुखदोषके नाशक देवादि करि वन्दनीय सब जीवको सुखदाई शरण जाकोएक वार हृदयमो लैआवत जेह चरण को जन जो दास सो तरण नाम आप संसारते पार तारण नाम औरनकों जो पार करनेवाले होतहैं पहिले तुकमों सब सम्बोधन है हे रघुवर पूर्व कह्यौ जो चरणकमल ताके दर्शनको आसरूप जो पास तेहिकरि तुलसीदास मरयो चहत है सो चरणकमल कब देखाइहौ यह प्रार्थना है २१८॥

मू०। हारहौंखोरहीकोआजारठत.येरिहाआरिऔरनकौरहीकेकाज। कलिकरालदुकालदारुणसबकुभांतिकुसाज। नीचजन मनऊंच जैसीकोढमें कीयाज। हहरिहियमें सदयबूझ्यो जाइ साम

समाज। मोहूं में कछुं कतहुं कोउ तिन्ह कह्यौ कोसलराज। दीनता दारिद दलै को कृपाबारिधिबाज। दानिदशरथराय के तुमबान इतसिरताज। जन्मकेभूखोभिखारी हौं गरीबनिवाज। पेटभरितुल-सिहिजेंवाइयभक्तिसुधासुनाज॥२१९॥

टी०। हे रघुवर आपके दरवाजे पर आज भोरही ते रेरिहा नाम रटनहै आरिनाम हठकरि रटत हैं पर और कछु याचत नहीं तुम्हारो जूठो एक कौर को काम है इहां द्वारतुल्य जगत काहे कि समस्त ब्रह्मांड परमेश्वर को निवास स्थान है अरु जबतें सन्मुख बुद्धि भई सोई भोर सदृश तथा वर्तमान समय सोई आज तुल्य रेरिहा कहबे को यह अभिप्राय है कि लोक मो प्रसिद्ध रद होत है ऐश्वर्यमान के ड्योढ़ी पर गाली सुनत हैं धक्का पावत हैं घसीटे जात हैं पर जेह कामनादि करि अड़िजात हैं तेहके लिये बिना याचनो नहीं छोड़त तद्वत् मोहूं को जानो इहां अपनो गुलाम करनो सोई कौर तुल्य है अपनी बिपत्ति देखावत हैं कि तो कठिन जो कलिकाल सोई दुकाल नाम अवर्षण करि अकाल सदृश कठिन दूसरे सब कुभांति नाम कोई उपाय रूप नानासाधन तेहते सुखकी प्राप्ति देखि पड़त नहीं अरु कुसाज नाम जितने मन बुद्धि इन्द्रियादि ताको कुत्सित व्यापार तीसरे यह जन नीचपर मनकी गति ऊंचो नाम भाग्यमो माठा रूप जो विषय सोऊ नहीं तहां मलाई रूप जो वैकुण्ठादि ताके प्राप्तकी रुचि होति है तौ कैसी गति भई जैसे कुष्टरोग करि गल्यौ देहमो खुजली होय अर्थात् कुष्टरोग तुल्य अपनी नीचता तामो ऊंची कामना खजुली सदृश तौ तेह दुख को भोग करे सोई जाने कहबे की गति नहीं यह दशा मो प्राप्त होकरि हृदय ते हहरि नाम हारि मानि दया युक्त जो साधन्ह की समाज तहां जाय बूझत भयौ कि आप सब कृपालु उपदेष्टा हौ कृपा करि कहो कि हमहूं ऐसे दुखी जीव को काहू स्थान मो कोऊ स्वामी शरण देनेवाला है तब तिन्ह कह्यौ कि और तो कोऊ नहीं पर अयोध्या के महाराज श्री रामजू हैं सो तोहूसे अति मन्द जीवन के ऊपर कृपा करत हैं आप के भक्तन्ह के उपदेश करि मैं ड्योढ़ीपर रद भयौं सो मेरी दीनता औ दारिद्र दूसरो को नाश करने वालो है काहे कि कृपाबारिधि नाम कृपाको समुद्र श्रीरघुबर हैं वेदशास्त्र अरु सज्जनन्ह के समाज मो यह बिर-दावलीरूप डंकावाज नाम बजि रह्यौ है चेत करो कि और भी दानी

हैं तो हे महाराज दशरथ के पुत्र दानदेवेको बानैतनाम बानावालो ताको भिरताजनाम मुकुटरूप आपहौ जन्मको भूखो गरीब हौं औ आप विदित गरीबनेवाज हौ अब फेर फार मतिकरो भक्तिरूप जो सुन्दर अनाज अमृततुल्य मधुर सो भरिपेट नाम फेरकामना न रहे तैसे तुलसी को भोजन करावो अर्थात् रंक जो होत है ताको भोजन मात्र प्रयोजन है कछू देश ऐश्वर्य नहीं चाहत तद्वत् मैं आप को संपत्ति चतुर्निधि मुक्ति अरु ज्ञानादि ऐश्वर्य नहीं याचत केवल भक्ति दै तृप्तिकरो यह प्रार्थना है ॥ २१९ ॥

मू० । कहियसंभार कोशलराय । औरठौरन औरगति अवलंबनाम
बिहाय । बूझिअपनीआपनोहितआपबापनमाय । रामरावरो
नामगुरुसुरस्वामिसखासहाय । रामराजनचलेमानसमलिनको
छलछाय । कोपतेहि कलिकालकायरमुयेहिंघालतघाय । लेत
केहरिकोबयरज्योंभेकहनिगोमाय । त्योंहिरामगुलामजानि
निकामदेत कुदाय । अकनियाके कपटकर तब अमित अनय
अपाय । सुखीहरिपुरबसतहोतपरिछितहिपछिताय । कृपासिंधु
बिलोकि अहिजनमनकि सासतिसाय । सरनहै आयोदेवदीन
दयालदेखनपाय । निकटबोलिनबरजियेबलिजाउँहनियनहाय ।
देखिहैंहनुमानगोमुख नाहरनिकेन्याय । अरुणमुखभ्रू विकट
पिंगलनैनरोषकषाय । बीरसुमिरसमीरकोघटिहैं चपलचित
चाय । विनयसुनिविहँसेअनुजसोंबचनकेकहिभाय । भलीकही
कह्योलखनहूंहँसिघनेसकलबनाय । दईदीनहिंदादिसोसुनिसु-
जनसदनबधाय । मिटेसंकटसोच पोचप्रपंचपापनिकाय । पेखि
प्रीतिप्रतीतिजनपरअगुणअनघ अमाय । दासतुलसीकहतमुनि
गणजयतिजयउरगाय ॥ २२० ॥

टी० । आप का नाम छोड़ि सोको दूसरो अवलंबनहीं अपनी न सुझे अपनो हित आपहु नहीं अरु माता पिता प्रसिद्ध हितकारी सोऊ नहीं केवल तुम्हारो नाम गुरु देवता स्वामी मित्र सहाय मेरो सब है हे रघुबर आपके राज्यमें मलीन मानस जो कलिकाल ताहुके छलकी छाया चली नहीं तोहि कोपते कादर जो कलिकाल सो मुये जो हम ताको घायनाम अपने प्रहार करि घालत नाम नाश करत है अर्थात् आपके राज्य में कलिकाल की प्रभुता कछू नहीं है सको तेहिते आपसों वाको वैरभयो अब यह समय में आपको दासजानि

करि मोकों मारत है जैसेगोमाय नाम श्रृगाल मेजुक कों मारिकरि सिंहतें बैरलेनोमानो तैसेही मोकों राम गुलाम जानिकरि निकाम नाम बे प्रयोजन कुदाय नाम कुदांव देत है अर्थात् बे समय दुखदेत है याको यह भाव भयो कि श्रृगाल तुल्य कलिकाल सो सिंह सदृश जो आपताको कछु करि सक्यौ नहीं मेजुका तुल्य जो मैं ताकों आप को गुलाम मानि नानादुख दैकरि आपतें बैर लियो मानश है यह कलिकाल के कपट की कर्तव्यता असंख्य अनय नाम अनीति अपाय नाम जीवन्ह के नाशको उपाय अकनिनाम जानिकरि बैकुंठमो सुख तें बसत जा परीक्षित ताकों पश्चात्ताप होतहै अर्थात् पद्मपुराणविषै भागवतमाहात्म्यमो यह कथा है कि राजा परीक्षित दिग्विजयकरिबे कों चले हैं तब कलिकाल कों प्रत्यक्ष देख्यौ वाको अनीति देखि मारबेकों चाह्यौ तब कलिकाल शरण भयो तेहि हेतुतें मारे नहीं कहिदियेकि हमारे राज्यभरमें अपनी प्रभुता मतिकरु अब ताकों कठिन कुचाल जानिकरि शोच करतहैं कि ऐसे दुष्टकों का हे छोड़ कलिकाल की अति कठोर करनी जनायवे के निमित्त यह कवि की उक्ति है हे कृपासिंधु यह जनके मनकी मासति साय नाम कलेस को समूह देखो हे देव यहदीन सन्मुख आयौ है आपके चरणके दर्शन कों हे स्वामी बलिजांव यह कलिकाल कों हनिय नाममारि डारो चेत नहायनाम नमारो तो निकट बोलायडारि देव यह अध्याहार है चेतन बरजिये कि ऐसेनीचकों हम निकटकाहेकों बुलावेंतौ हनु-मानजू न्यायनाम निसाफदेखिहैं गोमुखनाम गाय सदृश जो मैं अरु नाहरनि नाम बाघसमूह तुल्य जो कलिकाल अर्थात् राजन्ह की यह रीतिहै कि जो निसाफ आपनहीं करते सो निकटवासी जोमुसाहिब सेवक तेहिके सपुर्द करि देतहैं सो जौ आप न सावधान होंय तो यह गाय बाघको झगरो महावीरके सपुर्द करो जोयह निसाफकों बे देखे महावीरके इन्साफ देखेतें का हा होयगो सो कहतहैं गायसदृश जो मैताके ऊपरव्याघ्ररूप कलिकालकी अतिक्रूर करनीबूझि स्वाभा-विक वाकमुख टेढ़ीभौंह पीतनेच सो क्रोधतें मुख अरुनेच अत्यन्त कषायनामलाल ह्वैजायगो यह स्वरूप समीरको बीरनाम वायुको पुत्रजो बीर ताको स्वरूप स्मरणकरि कलिकालको चञ्चलचित्त को जो चाव सो घटि जायगो अर्थात् दंडतो पीछे होयगो क्रोधयुक्त मुखदेखत मात्र कलिकालकी करनी भूलि जायगी मेरे बिनयको

सुनि करि श्री रघुबर हंसे अरुण जो लक्ष्मणजू तेहितें कहे भाय नामहे भाई वचनके कहिनाम यहि फिरियादीमें कैसी युक्तिकी बातें कही हैं स्वामीकी आज्ञा सुनिकरि लक्ष्मणजू भी हंसिकरि कह्यौ कि हे महाराज यह दीन ने बहुत भली युक्ति कहीहै यह पूर्वोक्त कौं विचारि ग्रंथकार प्रसन्न होत हैं कि अब मेरो सब प्रकार बनावबन्यौ अर्थात् जबस्वामी लक्ष्मणजू सहित प्रसन्न भयेतो बनबेमो कौनसंदेहहै यह तुकातें लैकरि समाप्त पर्यंत कविकी मनो राज्यहै दीन जोमैं ताकौंदादिनाम निसाफदई अर्थात् कलिकाल के दुखतेंछोड़ाये सो सुनिकरि सज्जनन्हके बरबधाईबजे हैं यह बि- चारतें कि जब ऐसेदीनकौं निसाफकरि कृतार्थकिये तो साधुन्हके कृतार्थतामो कौनसन्देहहै यह रीतितें कलिकाल कृतसंकट सोच पोचनाम क्षुद्रता अरुनाना प्रपञ्च पापको निकायनाम समूह सब मिल्यो जनके ऊपरभीति प्रतीति स्वामीकी पेखिनामदेखि डरगाय नामबड़ोहै यशगावने योग्यजाको ऐसेजो आपसोतुम्हारी जयहोय यह सुनिमभूह अरुतुलसीदास कहतभये कैसेस्वामीहैं सगुणनाम निर्गुणके बसनहीं अनघनाम निष्पाप अर्थात् शुद्धस्वरूप अमायनाम माया के अधीन नहीं यह अर्थ है ॥ २२० ॥

मू० । नाथकृपाहीकोपंथचितवतदीनहैांदिनराति । होइधौंकेहि कालदीनदयालजानिनजाति । सुगुणज्ञान बिरागभक्तिसु साधननकीपांति । भजेबिकलबिलोकिकलिअघअवगुणनकी थाति । अतिअनीतिकुरीतिभइभुंइतरनिहूतेंताति । जाउं कहांबलिजाउंकहूं नठाउंमति अकुलाति । आपसहित न आपनो कोउ बापकठिन कुभांति । स्यामघनसींचिये तुलसी सालिसफल सुखाति ॥ २२१ ॥

टी० । हे नाथ आप के कृपा की राह दिन राति देखतहौं हे दीनदयाल सो कब होयगी यह नहीं जानी जात सुन्दर जो नानागुण अरुज्ञानबिराग भक्ति तथा और जो सुन्दर साधनन्हकी पांति नामसमूह सो कलिकाल कौदेखि व्याकुल ह्वै सब भजेनाम दूर गये अरुपाप तथानाना औगुण की थाति नामस्थिरताहोति भई अत्यन्त अनीति अरु कुरीति पृथ्वी मो भई तेहिते जो पृथ्वी जीवन्ह को ताप छोड़ावत रही सो सूर्यहूते अधिक ताति नाम ताप रूपभई बलिजांव हे स्वामी कहूं ठांव नहीं मिलत तो कहां

जांव मति अति व्याकुल होतिहै बाप नाम होपिता आप रक्षित अपनो कोऊ हितेनहीं देखि परततथा कठिन कुभांति नामअपनी करनी अरु गितले सम्बन्धी सब दुखदाई देखिपड़तहैं अब हे श्याम मेघरूप तुलसी रूप जो शालि नाम धान सो फलिकरि सूखत है ताको कृपा दृष्टितें सींचो अर्थात् जब मूलतें सूखि जायगो अकाज हिये हरो नहीं ह्वै सकत अब तक मूल हरा है जल पाय फिर पुष्ट होयगो इहां मेघ रूप श्रीराम जू जलरूप कृपा धान तुल्य गोसाईं सफल सदृश मनुष्य शरीर अरु शरीरको नाशहोनो सोई सूखनो अरु जितनी आयुर्बल रहिगई है सोई जड़की हरियारी भई यह समता है ॥ २२१ ॥

मू० । बलिजांउऔरकासोंकहैं। सदगुणसिंधुस्वामिसेवकहितकहुं
नकृपानिधिसोंलहौं । जहंजहंलोभलोललालचबसनिजहित
चितचाहनिचहौं। तहंतहंतरणीलकतउलूकज्यौंभटकिकुतरु
कोटरगहौं । कालसुभावकरम बिचित्रफलदायक सुनिसिर
धुनिरहौं । मोकोंतौसकलसदाएकरसदुसहदाहदारुण
दहौं । उचितअनाथहोइदुखभाजनभयौंनाथकिंकरनहौं ।
अबरावरोकहायनबूझियेसरनपालसांसतिसहौं । महाराज
राजीवबिलोचनमगनपापसंतापहौं । तुलसीप्रभुजबतबजेंहि
तेहिविधिरामनिबाहेनिर्बहौं ॥ २२२ ॥

टी० । सर्वगुण युक्त आपसदृश कोऊहै नहीं जहां जहां लोभ करि चंचल लालचके बसहै अपनो हित चितके चाहते चाहत हैं तहां तहां सूर्यको देखते जैसे उलूक भटकिकरि कुतरु जो कुत्सित वृक्ष ताके खोहरको ग्रहण करै तद्वत् मैं अर्थात् भोजन के निमित्त उलूक जहां तहां फिरतहै जबप्रातःकाल सूर्यकी ललाई देखिपड़ी तब खोडरमें पैठतहै सूर्य के देखे भोजन को मनोरथ निवृत्त होतहै तेहितें भटकि पददिये अरु कोटर मध्ये बसमें सारनहीं रहततेहितें कुतरु कहे तैसे मैं हूं जीविका के लोभकरि ऐश्वर्यवानन्ह के निकट जातहैं पर जब सूर्य समान तीक्ष्ण कठोर स्वभाव देखत हैं तो उलूक की नाईं भटकिनास मनोरथ भङ्ग ह्वै कुतरु के कोटर सदृश जो अपनो निवासस्थान तामें प्रवेश करत हैं अन्य देवता अरु प्राकृत ऐश्वर्यवानन्ह को लक्ष्य कहे अब काल स्वभाव कर्म जो जगत के कारण सो विचित्र फल देत हैं यह शास्त्र द्वारा सज्जानन्ह के सुख सुनि करि

अपनो माथ पीटि रहत हौं यह हेतुतें कि समस्त जगतकौं नौ-विचित्र फलदेतहैं अर्थात् कबहूं सुख अरु कबहूं दुखअरु मोकों तौ सकल जो कालादि सो सर्वदा एकोरस जानि पड़त हैं पर काहे कि जो कबहूं सुखको लेसउ होतो तौ बिचित्र फल देनकी प्रतीति होती सो है नहीं दुःसह जो त्रयतापरूप जलन अतिकठिन तेहितें एकरस जलतहौं हे नाथ तुम्हारे किंकर नहीं यावतरहे अनाथ ह्वै करिदुख को पात्रभयौ सो उचित भयो पर अब तुम्हारो कहाय हे शरणपाल सांसति सहत हौं सोनबूझिये नाम न चाहिये हे महाराज कमल नेन पापसंताप विषें हम डूबे हैं सो जब तब जौने तौने विधि हेप्रभु तुम्हारे निबाहे निर्वहौं नाम निबहूंगो अर्थात् दुख छूटेगो यह तुलसीको निश्चय है ॥ २२२ ॥

मू०। आपनोकबहुंकरिजानिहो। रामगरीबनिवाजराजमणिबिरदलाजवतआनिहो। शीलसिंधुसुन्दरसबलायकसमरथसदगुणखानिहो। पाल्यौहैपालतपालहुगेप्रणतप्रेमपहिचानिहो। वेदपुराणकहतजगजानतदीनदयालदीन दानिहो। कहिआवतबलिजांवमनहुंमेरीवारबिसारेबानिहो। आरतदीनअनाथनिकोहितमानतलौकिककानिहो। हैपरिणामभलोतुलसीको शरणागतभयभानिहो ॥ २२३ ॥

टी०। उत्कण्ठा करि विनय करतहैं हे गरीबनिवाज आपनोकरि कबहूं जानोगे हे राजमणि अपने बानाकी लाज हृदय मो कबहूंलै आवोगे आपसर्वगुणखानिहौ अरु तीनोंकालमेंजीवन्हको पालतहो तो अवश्य प्रणतनाम प्रणाम करत जो मैं ताके प्रेमको पहिचानोगे यह निश्चय है वेदलोक दोउमें प्रसिद्ध है कि आप दीन जीवन्ह के ऊपर दयाल हो अरु दीनन्ह के दानीहो बलिजांव हे रघुवर कहि आवतनाम कहिपरतहै कि सबकीबार दीनदयालादि बाना-स्मरण रहतहै पर मानो मेरीबार बिसारन शीलनाम भूलनेको स्वभावहोत है हे रघुवर निरालम्ब जीवन्हके आपहितहो यहसो संदेहनहीं पर मोको देखि लौकिक कानि नाम लाज मानत हो अर्थात् प्राकृत राजा जो छोटे मनुष्य को ग्रहण करे तो लोकमें निन्दा होति है सो विचारि नीचहूते नीच जोमैं ताको संग्रह करत लजात हो ऐसी बूझिपड़तहै तदपि परिणाम नाम अन्तमें भलो अवश्य होयगो काहे कि कैसाहू अधमजीव शरणप्राप्तहोय ताको भय आप दूरकरत है।

तौतुलसीकेभय भानिहैानाम नाश करेगों यह प्रतीति है ॥ २२३ ॥

मू०। रघुबरराबरी कबहुं मनलागिहै। कुपथकुचालकुमतिकुमनोरथकुटिल कपटकबत्यागिहै। जानत गरलअमियबिमोहबसअमियगनत करिआगिहै। उलटीरीतिप्रीतिअपनेकीतजिप्रभुपदअनुरागि है। आखरअर्थमंजुमृदुमोदकरामप्रेमपागपागिहै। ऐसे गुण गाइरिझायस्वामी सों पाइहैजोमुंहमांगिहै। तूयहिबिधिसुख सैनसोइहैजियकीजरनिभूरिभागि है। रामप्रसाद दासतुलसी उररामभक्तियोगलागि है ॥ २२४ ॥

टी०। मनोराज्यकरि उत्कण्ठा करत हैं रेमनरामजू के चरण मो कबहूं लगेगो तथाकुमार्गादि जोदोष ताको त्यागकरेगो कुटिलादि पदको अर्थ पीछेकईबार लिखिआये हैं ताते नहींलिखे अज्ञान बस विषको अमृत अमृतको अग्निजानत है अर्थात् विषयमो प्रीति करि परमेश्वरते विमुख होत है ऐसी उलटी रीतिप्रीति अपनी त्यागकरि रे मन प्रभुपदमो तू अनुराग करेगो भगवत् यशसम्बन्धी अक्षर अरु अर्थ सुन्दर तथा कोमल मोदक नाम लड्डू तुल्य ताको रामानुराग रूप पागते कबहुं पागेगो अर्थात् प्रीति सहित भगवत् यश कबहुं कीर्तनकरेगो चेतपूछै कि यह किये कहा फलहोयगो तो सुन यह रीतितें गुणगाय रिझायकरि स्वामी सें मुंहमांगो पावेगा रे जीव जैसाकह्यौ सो कियेतें सुखरूप शय्यापर सोवेगो अरु जियकी जरनि को समूहदूर होयगो तथा रामजू की प्रसन्नतातें हृदयमो रामजूकी भक्तियोग लगेगो यह तुलसीको निश्चयहै ॥ २२४ ॥

मू०। भरोसो श्रैार आइहै उरताके। कै कहूंलहै जो रामहिं सो साहिबकै अपनोवलजाके। कैकलिकालकराल नलखतमोह मारमदछाके। कैसुनिस्वामिसुभाव नरह्यौचित जोहित सब अंगथाके। हैांजानतभलिभांति अपनपौप्रभुसोसुन्यौंनसाके। उपलभीलखग म्रगरजनीचरभलेभये करतबकाके। कोभलो राम नाम सुरतरु सोउ प्रसाद कृपाल कृपाके। तुलसी सुखी निसोचराजज्यौंबालकमायबबा के ॥ २२५ ॥

टी०। रघुबर आपको छोड़ि श्रैार को भरोसो ताके हृदयमो आवेगो जो तुमऐसो स्वामी अपने भाग्यतें कहुं दूसरोपावे अथवा जाको अपनेज्ञानादि साधनको बल है तीसरो जोमोह अरुकाम रूपमदिरा छाकेनाग पियेहेको कठिन जो कलिकाल सो सुभत

नहीं चैाथे जो स्वामीको गरीबनिवाज स्वभाव सुनिकरिभी याके चित्तमो नरह्यौ जो स्वामी सबअङ्ग याकेनाम सर्वसाधनहीन जीव ताह्नको हितकारी अर्थात् आप ऐसे दीनबन्धुको गुण सुनिकरि भी बिमुखहोतहैं सोदूसरेको भरोसाकरो पूर्वकहे जो चारप्रकार के जीवसो आपते बिमुख होंय पर मैंतो अपनपौनास निजपैारुष भलीप्रकार जानतहैं कि काहू भलीकरनी न करी अरु प्रभुऐसे दूसरो को पतितपावनादि शोका न सुन्यौं आपई बिचारो कि अहिल्यादिको भलो कोहिके कर्तव्यताते भयोहै इन सबन्हसे कछु भलोकरनो नहींरही अर्थात् अपने सामर्थ्यतें पैारुषहीन जीवन्ह को आप कल्याणकरतहैा तैसे मैंहूंहौं तब आपको छोड़ि दूसरो केहका भरोसाकरै हे स्वामी आपनभी कृपा करो तौहूं तुम्हारो नाम रूप कल्पवृक्ष है कृपाल आप के कृपा को प्रसाद नाम फल फलेगो ऐसी तुलसीको प्रतीतिहै यहहेतुतें सुखी अरु शोचरहित रहत है जैसे माता पिताके राज्यमो बालक अर्थात् पिता राजा होय तब पुत्र कौं कौन शोचहै तैसे नाम को प्रभाव रूप राज्य बन्यौहै तब मोकों कौन चिन्ता यहभाव है॥ २२५॥

मू०। भरोसोजाहिदूसरोसोकरो। मोकौतो रामकोनामकल्पतरु
कलिकल्याणफरो। कर्मउपासन ज्ञानवेदमत सोसबभांति
खरो। मोहिंतोसावनकेअंधहिज्यौंसूझतरङ्गहरो। चाटत
रह्यौस्वानज्यौंपातरकबहुंनपेटभरो। सोहैां सुमिरतनाम
सुधारसपेखत परसिधरो। स्वारथ औ परमारथहूकोनहिं
कुंजरोनरो। सुनियतसेतु पयोधिपषाननिकरि कपिकटक
तरो। प्रीतिप्रतीतिजहांजाकीतहंताकोकाजसरो। मेरेतो
मायबापदोउआखरहौं शिशु अरनिअरो। शंकर साखिजौं
राखिंकहौंकछुतौजरिजीहगरो। अपनोभलोरामनामहितें
तुलसिहिसमुझिपरो॥ २२६॥

टी०। जाको दूसरो भरोसा होय सो करो मोको तो नाम रूप कल्पवृक्ष कलिकालमो कल्याण रूप फलफल्यो चेत कोउ कहे कि और साधनन्ह कों तुम खण्डन करत हो सो नहीं कर्म उपासना ज्ञान यह त्रिकाण्डवेद कह्या है सो सबप्रकार खरोहै खोटा नहीं पर मोकोंतो सावनके अंधेकीनांई हरो रङ्ग सूझतहै अर्थात् सावन मासमो आंखि बन्दभई वाको सबमों देखा जो हरियरो सोई देख

वैशाखमें भी जानतहै तैसेमेरोभलो नामतेभयो और साधन कों मैं कहांलागूं अपनी गति देखावतहैं नामावलंबके पहिले स्वान की नाईं प्रातरिचाटत फिरतरह्यो कबहुं न पेटभर्यो नाम अनेक पक्षचारने सहस्र नानासाधनकिये पर क्षुधारूप कामना न गई सोई हमहैं दूसरोअन्न नहीं नयोहै अब जबते नाम अंगीकारतहैं तबतें अन्नतरस परोसो परचोहै ताको देखतहूं खावेकी रुचिनहीं होत अर्थात् अन्नतरस्य अर्थ धर्म काम मोक्ष नामकेप्रभावते प्राप्त होइगावत है पर वाहूमें कामना नहीं होति चेत कोई पूछे कि और साधनते स्वारथ अथवा परमारथको सुखहोतहै कि नहीं सो हम कह नहींसके जैसे महाभारतके संग्राममें महाराज युधिष्ठिर कहे कि अश्वत्थामाहतः कुञ्जरो वा नरो वा नाम हाथी औ मनुष्य दोऊको नाम अश्वत्थामा है तामें कौनमारोगयो यह हम नहीं कहि सकते तैसे रामनामते अन्यजो स्नानादि साधन सो स्वारथ परमारथ सम्बन्धी सुखदेत हैं अथवा नहीं यह निश्चय हम नहीं कहिसकते तामेहेतु कि अनियत नाम स्नानादिको फलशास्त्रकरि सुनतहैं पर अपनेमें वाकोफल देख्यो नहींतो सुनीबातकी गवाही कोदे अरु नामावलंबकरि अपनेको तृप्तिभईहै तथा समुद्रविषे पर-वतन्ह को सेतुबांधि करि बानरन्ह की सेनापार ह्वैगई अर्थात् जेह पर्वत के ऊपर रामनाम लिखोगयो सो पर्वत आपऊ न डूब्यो औरन्ह को जहाजरूप ह्वै पार कियो तो जोनाम पाषाण को जहाज कियो तेहनाम के अवलम्बकरि मनुष्य चैतन्यसंसार समुद्रको पारहोय तौ कवन आश्चर्यहै यद्यपि सेतुबंध विद्यमानहै नामको यह प्रत्यक्ष प्रभाव देखिकर तामें प्रीति प्रतीति होतिहै यहां स्वारथ औ परमारथ को दाता कुंजरोनरोनाम मनुष्य औ पशुकोऊ नहीं है अरुशास्त्रते सुनत हैं कि नामके प्रभावते समुद्रमें पत्थर को सेतु बांधिकरि बानर की सेनापार भईताते सबकी आशछोड़ि करिनामावलम्बकरनोयहसम्मत है पहिलोअर्थ कठिनबूझि यहसुधा अर्थलिखे अरुजौनहींकै जगहहै पाठ होयतो यह अर्थहै कि स्वारथ अरुपरमारथ संबंधी सुखदेवेको पशु मनुष्य बहुत हैं पर पत्थर के बांधरूप जहाज करि पशुन्ह की फौजसमुद्र केपारभई शास्त्रमें सुनतहैं सोयह प्रभाव केवलनामको है ऐसो विचार नामावलंब करनोयह सिद्धान्त है चेतयह संदेह होय कि बड़े२ महात्मन्ह की निष्ठाअन्य साधनन्हमें शास्त्रद्वारा जानीजात